सम्पादक
हारून रशीद
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

अगस्त, 2021 वर्ष 20 अंक 06

मुहर्रम

मुहर्रम का आया मुबारक महीना
खुदा ने कहा इसको अपना महीना
करो नेकियाँ इसमें इमकान भर तुम
पढ़ो इसमें कुरआन इमकान भर तुम
हुए हैं शहीद इसमें हज़रत हुसैन
नबी के नवासे हैं हजरत हुसैन
थे साथी बहत्तर हुए सब शहीद
हैं जन्नत में जो भी हुए हैं शहीद
शहीदों का दर्जा बहुत है बढ़ा
शहादत के बदले में उनको मिला
वह ज़िन्दा हैं उनको न मुर्दा कहो
हैं जन्नत में रब के वह मेहमां कहो
नबी पर पढ़ो तुम सलातो सलाम
शहीदों को भी तो करो तुम सलाम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
मुहर्रम का मुबारक महीना	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
मानव एकता व समता की परिकल्पना	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	13
सहाबा किराम रज़ि0 की इज़्ज़त	हज़रत मौलाना सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	15
फ़िलिस्तीन की समस्या	मौ0 सै0 वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0	19
इन्सानी ज़िन्दगी और क़लम	डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी	23
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	27
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	29
सय्यिदुना हज़रत हुसैन रज़ि0	इदारा	31
बयान गुफा वाले अल्लाह वालों का	इदारा	32
इस ग़म की तलाफी कब होगी (पद्य)	माहिरुल क़ादिरी मरहूम	34
क़ानूने इलाही है कुरआन का फ़रमान	अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी	35
महान पक्षी–विज्ञानी सालिम अली	इदारा	36
कलौंजी	राशिदा नूरी	39
शहादत की वास्तविकता	डॉ0 हाफ़िज़ हारून रशीद	40
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुअनि की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अन्फ़ालः-

अनुवाद—

वे आप से ग़नीमत के मालों का आदेश पूछते हैं आप कह दीजिए कि ग़नीमत के माल अल्लाह के और उसके पैग़म्बर के हैं तो तुम अल्लाह से डरते रहो और आपस में सुलह रखो और अल्लाह और उसके पैग़म्बर का आदेश मानो अगर तुम सच मुच ईमान वाले हो(1) ईमान वाले तो वह हैं कि अल्लाह का नाम आता है तो उनके दिलों की धड़कन तेज़ हो जाती है और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जाती हैं तो वे उनका ईमान बढ़ा देती हैं और वे अपने पालनहार पर ही भरोसा करते हैं(2) जो नमाज़ क़ायम रखते हैं और हमारी दी हुई रोज़ी से ख़र्च करते हैं(3) वही वास्तव में ईमान वाले हैं उनके लिए उनके पालनहार के पास बुलन्द दर्जे हैं और मग़फिरत है और इज़्ज़त की रोज़ी है[1](4) जैसे आपको आपके पालनहार ने आपके घर से हक़ के साथ निकाला जब कि मुसलमानों में एक गिरोह को यह बात नापसंद थी(5) वे सही बात के सामने आ जाने पर भी आप से उसके बारे में हुज्जत कर रहे थे मानो उनकी आँखों के सामने उनको मौत की ओर खींच कर ले जाया जा रहा हो(6) और जब अल्लाह दो गिरोहों में से एक का तुम से वादा कर रहा था कि वह तुम्हारे हाथ लगेगा और तुम चाहते थे कि जिसमें काँटा भी न चुभे वह तुम्हारे हाथ आये और अल्लाह चाहता था कि अपने कलिमों से सच को सच कर दिखाए और काफ़िरों की जड़ काट दे(7) ताकि सच को सच कर दिखाये और झूठ को झूठा कर दे चाहे अपराधियों को बुरा ही लगे(8) जब लगे तुम अपने पालनहार से फरियाद करने तो उसने तुम्हारी फरियाद सुन ली कि मैं ज़रूर सिलसिलेवार एक हज़ार फरिश्तों से तुम्हारी मदद करूँगा[2](9) और यह तो अल्लाह ने केवल तुम्हारी खुश ख़बरी के लिए और तुम्हारे दिलों को संतुष्ट करने के लिए किया और मदद तो अल्लाह ही के पास से आती है, बेशक अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है(10) और जब वह अपनी ओर से सुकून के लिए तुम पर ऊँघ डाल रहा था और तुम पर आसमान से पानी उतार रहा था ताकि उससे तुम्हें पवित्र कर दे और शैतान की नापाकी तुम से दूर कर दे और ताकि तुम्हारे क़दमों को जमा दे[3](11) और जब आपका पालनहार फरिश्तों को यह आदेश भेज रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूं तो तुम ईमान वालों के कदमों को जमाओ, मैं जल्द ही काफ़िरों के दिलों में आतंक डाल दूँगा तो गर्दनों के ऊपर से मारो और उनके पोर पोर पर मारो(12) यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर से दुश्मनी मोल ली है और जो कोई अल्लाह और उसके पैग़म्बर से दुश्मनी मोल लेता है तो बेशक अल्लाह कठोर दण्ड देने वाला है(13)

यह तो तुम चख लो और जान लो कि इनकार करने वालों के लिए दोज़ख़ का अज़ाब है[4](14) ऐ ईमान वालो! जब काफ़िरों से जंग के मैदान में मुठभेड़ हो तो उनको पीठ मत दिखाना(15) और जो कोई उस दिन उनको पीठ दिखाएगा तो वह अल्लाह का प्रकोप ले कर पलटेगा और उसका ठिकाना दोज़ख़ है और वह बहुत ही बुरी जगह जा ठहरा सिवाए इसके कि वह जंग के लिए पैंतरा बदलने वाला हो या अपनी फ़ौज में जा मिलने वाला हो[5](16)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. यह सूरह मदनी है बद्र युद्ध के बाद उतरी यह युद्ध सत्य व असत्य का पहला युद्ध था, मुसलमानों ने तेरह साल के जीवन में जो जुल्म सहे और धैर्य व अडिगता का प्रदर्शन किया वह इतिहास की अद्भुत घटना है पवित्र मदीना हिजरत के पश्चात मुसलमानों को मुकाबले की आज्ञा मिली और यह पहली जंग इस प्रकार हुई की अबू सुफियान अपने बड़े व्यापारी क़ाफिले के साथ शाम से वापस हो रहे थे जिसका बड़ा मकसद मुसलमानों के विरुध संसाधन उपलब्ध करके उनको जड़ से उखाड़ फेंकना था हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब खबर मिली तो उन्होंने सहाबा से मश्विरा किया और एक गिरोह तैयार करके उस काफिले को रोकने के मकसद से निकले उधर मक्का वालों को आपके निकलने की खबर मिली तो उन्होंने विधवत रूप से मुकाबले के लिए एक बड़ी सशस्त्र सेना रवाना किया, इधर चूंकि विधवत रूप से जंग करना मक़सद न था इसलिए यह तीन सौ तेरह का छोटा सा गिरोह था और जंग के सामान भी न थे, दूसरी ओर एक हज़ार की सशस्त्र सेना थी, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा से मश्विरा किया कि दो जत्थे तुम्हारे सामने हैं एक व्यापारिक जत्था और दूसरा एक हज़ार की फ़ौज अल्लाह तआला का वादा है कि दोनों में से किसी एक पर अल्लाह तुमको विजय देगा, चूंकि जंग की तैयारी न थी इसलिए कुछ लोगों की राय क़ाफिले की ही हुई लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की राय सेना से मुकाबले की थी, बड़े–बड़े सहाबा ने भी इसी के लिए जान कुर्बान कर देने वाले भाषण दिये फिर बद्र के स्थान पर अल्लाह तआला ने मुसलमानों को खुली जीत प्रदान की और सत्तर बड़े बड़े कुरैश के सरदार मारे गये और इतने ही क़ैदी बनाये गये ग़नीमत के माल के बारे में कुछ विवाद जैसी परिस्थिति उत्पन्न हुई थी इसलिए इसके बारे में प्रश्न किया गया इस पर यह आयतें उतरीं कि वह अल्लाह और उसके पैग़म्बर का है उनके आदेशानुसार बाँटा जाएगा, मुसलमानों को चाहिए कि ये आपस में सुलह रखें अपनी राय छोड़ कर केवल अल्लाह और उसके पैग़म्बर की बात मानें। अल्लाह का नाम बीच में आ जाए तो डर व भय से काँप उठें, आयतें सुन कर उनका ईमान बढ़ता रहे यहां तक कि वे केवल अल्लाह ही पर भरोसा रखें और उसी के नाम पर धन दौलत ख़र्च करें।

2. यानी सोचो कि शुरु से अंत तक कैसा अल्लाह का समर्थन प्राप्त रहा अल्लाह ने बिल्कुल उचित और सही समय

पर आपको मदीने से बाहर पहुंचाया फिर सेना से मुकाबला हुआ जब कि एक गिरोह का विचार था कि सेना से मुकाबला

शेष पृष्ठ ....12..पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

हज़ से सम्बन्धितः—

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़ की बड़ी फज़ीलत बयान फरमाई है, आपने फरमाया ''ऐ लोगो तुम पर हज़ फर्ज़ किया गया है तो हज़ करो। हज की अहम्मीयत को सामने रखते हुए एक शख्स ने पूछा या रसूलुल्लाह क्या यह हज हर साल फर्ज है? आपने उसका कोई जवाब नहीं दिया, उसके बाद लोगों को सम्बोधित करके कहा कि अगर मैं यह कह देता कि यह हर साल फर्ज है तो अल्लाह तआला हर साल फर्ज़ कर देता, और तुमसे यह हर साल अदा न हो सकता, इस लिए मैं जितनी बात का हुक्म दूं उस पर अमल करो और जिन बातों से रोकूं रुक जाओ बे ज़रूरत सवाल न किया करो, अगली कौमें इसकी वजह से हलाक हो चुकी हैं।

(मुस्लिम)

हज पूरी उम्र में केवल एक बार फर्ज है आपने फरमाया है कि जिस शख्स ने खालिस अल्लाह को राजी करने के लिए हज किया और हज के सफर में न तो नफ़्स की इच्छाओं पर चला और न बेशर्मी की बात की और न किसी से लड़ाई झगड़ा किया और न दूसरी कोई बुराई की तो वह हज से वापस होगा तो गुनाहों से इस तरह पाक हो चुका होगा जिस तरह बच्चा माँ के पेट से पैदा होने के वक्त होता है। (बुखारी—मुस्लिम)

इसमें कुछ भी शक नहीं है कि हज से तमाम गुनाह मुआफ हो जाते हैं मगर मुआफ़ी की जो शर्तें कुर्आन और हदीस में हज़ के सही होने और गुनाहों के मुआफ होने के लिए लगाई गई हैं उनका पूरा करना भी जरूरी है। अब जो शख्स अल्लाह को राज़ी करने के बजाए दिखावे के लिए या केवल व्यापार के लिए हज करता है वह बुराईयों से बचने के बजाए हज काल में भी वह बुराईयां करता है उसको यह फ़जीलत कैसे मिल सकती है?

ऐसे शख्स का हज कैसे क़बूल हो सकता है और उसके गुनाह कैसे मुआफ हो सकते हैं? जो हज के काल में व्यापार तथा नाम कमाने ब्लेक मार्केटिंग, इस्मग्लिंग और हाजी कहलाने के लिए हज करता है उसको हज की उक्त फजीलत कैसे मिल सकती है?

जो लोग हज करने का सामर्थ्य रखते हैं और फिर भी हज नहीं करते उनके विषय में आपने फरमाया कि जिस शख्स के पास हज के सफर का खर्च और सवारी की सुविधा हो और वह बैतुल्लाह (काबे) तक पहुंच सकता हो फिर भी वह हज न करे तो अल्लाह के निकट तो उसके मरने और यहूदी और नसरानी हो कर मरने में कोई अंतर नहीं है, बल्कि दोनों बराबर हैं। क्योंकि अल्लाह ने फरमाया हैः ''लोगों पर अल्लाह का हक है कि जिसको बैतुल्लाह तक पहुंचने की सामर्थ्य प्राप्त हो, वह उस घर का हज करे, और जिसने इनकार किया तो (इस इनकार से अल्लाह का कुछ नहीं बिगड़ता) अल्लाह तो सारे संसार से बे नियाज़ा है''।

(तिर्मिजी—3:97)

हज न करने को कुफ़्र कहा गया। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसकी ज़बानी ताकीद नहीं की अपितु सन् 1 हिज्री में सहाबा की बड़ी तादाद के साथ उमरा किया और सन् 10 हिज्री में सहाबा की एक लाख से ज़ियादा तादाद के साथ हज किया इस हज को ''हिज्जतुल वदाअ़'' कहते हैं इसमें आपने जो प्रसिद्ध भाषण दिया उसको ''खुत–बए–हिज्जतुल वदाअ़ कहते हैं।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की जियारतः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरी वफात के बाद जिसने मेरी क़ब्र की जियारत की गोया उसने मेरी ज़िन्दगी में मेरी ज़ियारत की।

(दारकुतनी)

इस तरह की और भी कई रिवायतें हैं अगरचि यह रिवायतें सनद से कमज़ोर हैं लेकिन इतनी जियादा हैं कि उनसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कब्र की जियारत वाजिब नहीं तो वाजिब के करीब ज़रूर है।

जमहूर उलमा हज के बाद अगर कोई रुकावट न हो तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कब्र की जियारत को जरूरी करार देते हैं।

एक ह़दीस का भावार्थः–

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि रख्ते सफ़र मत बांधों सिवाय तीन मस्जिदों के, मस्जिदे हराम (मक्का मुकर्रमा) मेरी मस्जिद (मदीना मुनव्वरा) और मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मक्दिस के लिये)।

(अबू दाऊद)

इस हदीस से कुछ लोगों ने समझा की किसी कब्र की जियारत के लिए सफर करना मना है। अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की जियारत के लिए सफर करने से रोका जाना साबित होता है, यही अर्थ प्रसिद्ध आलिम इमाम इब्ने तैमिया रह0 भी लेते हैं। अतः उनके निकट भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र के लिए सफर करना मना है, ऐसा अर्थ लेने वाले कुछ लोग हज के दौरान नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की जियारत के लिए नहीं जाते हैं और कुछ लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद की जियारत की नीयत से मदीने का सफर करते और यहां पहुंच कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की भी जियारत करते हैं और सलाम पेश करके सवाब लेते हैं परन्तु उम्मत के दूसरे उलमा विषेश कर हनफी उलमा हदीस का अर्थ यह लेते हैं कि किसी मस्जिद की जियारत करने और उसमें नमाज़ पढ़ने की नीयत से सफ़र करने में कोई फजीलत नहीं, सिवाए तीन मस्जिदों के मस्जिदे हराम, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद और मस्जिदे अक्सा, इन तीन मस्जिदों के अतिरिक्त किसी और मस्जिद के लिए सफ़र करने से रोका जाना समझा जाएगा, अगर इन तीन मस्जिदों के अतिरिक्त बिल्कुल सफ़र से रोका जाना समझा जाएगा तो न तिजारत के लिए सफ़र करना दुरुस्त होगा न इल्म हासिल करने के लिए न नौकरी के लिए और यह मतलब किसी के निकट सही नहीं है।

शेष पृष्ठ....38 पर

मुहर्रम का मुबारक महीना

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

मुहर्रम हिज्री कलेण्डर का पहला महीना है यानी इस्लामी कलेण्डर का पहला महीना है, अल्लाह तआला यह महीना सारे इंसानों को मुबारक करे और इस महीने में अल्लाह तआला ने जिस तरह अपने बहुत से खास बन्दों को इंआ़मात से नवाज़ा था अब दुन्या के सारे बन्दों को कोरोना के अ़ज़ाब से नजात देने का इंआ़म अता करे, आमीन।

मुहर्रम के शुरु के दस दिनों में रोजे रखने का बड़ा सवाब है मुहर्रम की दस्वीं तारीख़ को यौमे आशूरा कहते हैं, अगर इन दिनों में रोज़ा न रख सके तो आशूरा का रोज़ा ज़रूर रखे कि सुन्नत है अलबत्ता उसके साथ नौ या ग्यारह का रोज़ा मिलाना मुस्तहब है, अल्लाह ने आशूरा के दिन अपने खास बन्दों पर बड़े बड़े इंआ़मात किये हैं, सबसे क़रीबी इंआ़म मूसा अलैहिस्सलाम पर हुआ जब वह फिरऔन के जुल्म व सितम से बचाने के लिए रातों रात बनी इस्राइल को ले कर मिस्र से निकलने के लिए चल पड़े लेकिन फिरऔन को ख़बर हो गयी वह भी अपनी फौज ले कर बनी इस्राईल को घेर लेने के इरादे से चल पड़ा, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम समन्दर के किनारे पहुंच गये, वह समन्दर पार करने की कोई तदबीर करते लेकिन बनी इस्राईल को मालूम हुआ कि फिरऔन अपनी फौज के साथ हम तक पहुंचने वाला है तो वह सब बहुत घबरा गये और मूसा अलैहिस्सलाम से कहा अब तो हम हलाक हुए, मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा नहीं, अल्लाह मेरे साथ है और अल्लाह के हुक्म से अपना अ़सा (लाठी) समुन्दर में मारा तो समुन्दर में रास्ता हो गया, दोनों जानिब समुन्दर पहाड़ की तरह रुक गया हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बनीइस्राईल को ले कर उस रास्ते से समुन्दर पार कर गये, अब फिरऔन भी अपनी फौज के साथ समुन्दर के किनारे आ पहुँचा और रास्ता देख कर अपनी फौज के साथ उसी रास्ते पर चल पड़ा जब बीच में पहुंचा तो समुन्दर का पानी जो रुका हुआ था वह मिल गया और फिरऔन अपनी फौज के साथ डूब कर मर गया। यह मुहर्रम की दस तारीख़ थी, उसके बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर जो इंआ़म हुआ उनकी उम्मत यहूदी दस मुहर्रम को शुक्राने के तौर पर रोज़ा रखने लगे, हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से हमारा तअ़ल्लुक़ यहूदियों से ज़ियादा ही है और दस मुहर्रम को खुद रोज़ा रखा और उम्मत को रोज़ा रखने की तरग़ीब दी।

लेकिन इस मुबारक दिन में एक बहुत ही ग़मनाक वाक़िया हुआ यानी दस मुहर्रम ही को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लाडले नवासे हज़रत हुसैन रज़ि0 को नबी की उम्मत के कुछ ज़ालिम लोगों ने हज़रत हुसैन रज़ि0 को जुलमन शहीद कर दिया, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न।

जी चाहता है इस वाक़िये को संक्षेप में पाठकों के सामने प्रस्तुत कर दिया जाये।

हज़रत मुआ़विया रज़ि0

ने आख़िरी उम्र में अपने इज्तिहाद से अपने बाद अपने बेटे यज़ीद को वली अहद नामज़द कर दिया, मगर मौजूद सहाबा को यह फैसला पसन्द न आया, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र, हज़रत हुसैन बिन अली, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 ने खुल कर नकीर की, लेकिन हज़रत मुआविया अपने फैसले पर जमे रहे, 22 रजब सन् 59 हिज्री को हज़रत मुआविया का इंतिक़ाल हो गया और यज़ीद तख़्त पर बैठ गया, उस वक़्त तक़रीबन साठ सहाबा मौजूद थे, चाहे उनको यज़ीद का तख़्त पर बैठना अच्छा न लगा हो मगर सब ने बैअ़त कर ली, हज़रत अब्दुर्रहमान का इन्तेक़ाल हो चुका था, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास की राय बदल चुकी थी, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और हज़रत हुसैन बिन अली मदीने में थे हज़रत हुसैन रज़ि0 की मदीने में खासी जायदाद थी वह मालदार लोगों में से थे, मदीने के गवर्नर ने उनको बुलाया और यजीद के लिए बैअ़त माँगी, आप रज़ि0 ने फरमाया मैं तन्हा बैअ़त नहीं करूँगा किसी मौक़े से मज्मे के सामने मुझ से बैअ़त तलब करना, यह कह कर गवर्नर के पास से चले आये, यह रात का वक़्त था और रातों रात अपने अहलो अयाल को ले कर मदीने से मक्के को रवाना हो गये, अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर से भी बैअ़त का मुतालबा हुआ वह भी बहाना करके रातों रात मक्का मुकर्रमा को रवाना हो गये।

दोनों बुज़ुर्ग अपने अपने रास्तों से ख़ैर व आफियत के साथ मक्का मुकर्रमा पहुँच कर वहां क़ियाम किया, ज़ाहिर है किराये के मकानात लिए होंगे, यज़ीद की तरफ़ से मुक़र्रर मक्के के गवर्नर ने दोनों बुज़ुर्गों से बैअ़त का मुतालबा नहीं किया, थोड़े दिनों बाद अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने अपनी इमारत की कोशिश शुरु कर दी, वह अपनी कोशिश में कामयाब चल रहे थे, मगर हज़रत हुसैन रज़ि0 खामोश थे।

कूफा जो हज़रत हुसैन के वालिद हज़रत अली रज़ि0 और बड़े भाई हज़रत हसन रज़ि0 का दारुल ख़िलाफत रह चुका था अगरचे हज़रत अली रज़ि0 कूफियों से हमेशा नालां रहे, और कूफियों ने हज़रत हसन रज़ि0 को तकलीफ़ें पहुँचाईं थी मगर अब कूफा के सरदारों के दिलों में हज़रत हुसैन रज़ि0 की महब्बत उभर आई, कूफा के सरदारों ने अलग अलग हज़रत हुसैन को खुतूत क़ासिद के ज़रिये पहुँचाये, और उसके बाद भी ख़ुतूत भेजने का सिलसिला जारी रहा, इन सैकड़ों खुतूत को पढ़ कर हज़रत हुसैन रज़ि0 का दिल कूफे की तरफ़ माइल हो गया लेकिन तफ़्तीशे हाल के लिए हज़रत हुसैन ने अपने चचा ज़ाद भाई मुस्लिम बिन अक़ील को कूफा भेज दिया।

मुस्लिम बिन अक़ील जब कूफा पहुंचे तो उनका बड़ा इस्तिक़बाल हुआ, एक रिवायत में है चालीस हज़ार और दूसरी रिवायत में अट्ठारह हज़ार कूफिरयों ने हज़रत हुसैन रज़ि0 के लिए हज़रत मुस्लिम के हाथ पर बैअ़त की, हज़रत मुस्लिम ने हज़रत हुसैन रज़ि0 को ख़त लिखा यहां के हालात आपके हक़ में हैं आप तशरीफ लायें, ख़त पाते ही हज़रत हुसैन रज़ि0 ने अपने अहलो अयाल के साथ कूफा जाने का ऐलान कर दिया, मक्के में जब यह खबर फैली तो मक्के के सभी बुज़ुर्गों

ने हज़रत हुसैन रज़ि0 को कूफा जाने से रोका, उन बुजुर्गों में घर के बुजुर्ग अब्दुल्लाह बिन अब्बास थे उन्होंने कहा, अगर नहीं मानते तो औरतों और बच्चों को अभी साथ न ले जाओ, मगर हज़रत हुसैन रज़ि0 अहलो अयाल के साथ रवाना हो गये।

यज़ीद को इस की ख़बर हुई तो उसने कूफा के नर्मदिल गवर्नर को बदल कर सख़्तदिल गवर्नर उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद को मुकर्रर किया उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद ने कूफा पहुँच कर दौलत दे कर या ख़ौफ दिला कर कूफा के सरदारों को अपना हमनवां बना लिया, और हज़रत मुस्लिम को गिरिफ्तार कर लिया, हज़रत मुस्लिम ने हज़रत हुसैन रज़ि0 को ख़त भेजा कि यहां के हालात बदल गये, यहां न आइये, हज़रत मुस्लिम को शहीद कर दिया गया, क़ासिद ख़त ले कर हज़रत हुसैन के पास पहुंच गया वह रास्ते में थे, क़ासिद ने कहा मुस्लिम शहीद कर दिये गये, हज़रत हुसैन को बहुत दुख हुआ और उन्होंने वापसी का इरादा किया, मुस्लिम के घर वालों ने कहा, हम तो कूफा जायेंगे, बदला लेंगे या जान देंगे, इस तरह सफर जारी रहा, आगे एक चश्मे पर हज़रत हुसैन ने पड़ाव किया, उधर इब्ने ज़ियाद ने हज़रत हुर्र को एक हज़ार सवारों के साथ भेजा और लिखा कि हज़रत हुसैन को कूफा जाने से रोक दो।

''हुर्र को ''हज़रत'' इस लिए लिखा क्योंकि वह बाद में हज़रत हुसैन की तरफ़ से लड़ कर शहीद हुए थे।''

हुर्र अपनी फौज के साथ हज़रत हुसैन के पड़ाव तक पहुंच गया और हज़रत हुसैन से कहा हमको इब्ने ज़ियाद का हुक्म है कि आप को कूफा न जाने दें, ज़ुह्र का वक़्त हुआ, हज़रत हुसैन ने नमाज़ पढ़ाई, हुर्र के फौजियों ने भी उनके पीछे नमाज़ पढ़ी, हज़रत हुसैन न हज़रत हुर्र और उनके फौजियों को मुख़ातब करके कहा तुम लोगों ने हमको बुलाया है तो हम आये हैं वरना चाहो तो हम वापस जायें सैकड़ों खुतूत सामने रख दिये, जवाब मिला हमने आपको नहीं बुलाया, यह खुतूत हमने नहीं लिखे, हम तो आपको कूफा नहीं जाने देंगे, अब हज़रत हुसैन ने वापसी का इरादा कर लिया मगर हुर्र ने कहा, हम को इब्ने ज़ियाद का हुक्म है कि हम आपको वापस भी न जाने दें, और जिधर चाहें चलें हम आपके साथ चलेंगे, दो मुहर्रम सन् 61 हिज्री को यह काफिला कर्बला पहुंच गया, इब्ने ज़ियाद ने पैग़ाम भेजा, हुसैन रज़ि0 को वहीं रोक दो, हम चार हज़ार फौज तुम्हारी मदद को भेज रहे हैं, अब वहां एक तरफ हज़रत हुसैन रज़ि0 के अहलो अयाल का ख़ेमा था तो दूसरी तरफ़ पाँच हज़ार कूफियों का ख़ेमा था, इब्ने ज़ियाद का मुतालबा था कि हुसैन रज़ि0 हमारे हाथ पर यज़ीद के लिए बैअ़त करें, हज़रत हुसैन रज़ि0 इसके लिए तैयार न थे, आखिरकार हज़रत हुसैन रज़ि0 ने तीन मुतालबे रखे।

1. हमको हम जहां से आये हैं वहां वापस जाने दिया जाये।
2. हमको यज़ीद के पास जाने दिया जाये, हम उसके हाथ में हाथ दे कर अपना मुअ़मला हल कर लेंगे।
3. या हमको किसी सरहद पर जाने दिया जाये।

मगर इब्ने ज़ियाद अपने मुतालबे पर अड़ा रहा कि हमारे हाथ पर यज़ीद के लिए बैअ़त करें या लड़ें, पाँच हज़ार फौज के साथ 72 क्या लड़ते, 10 मुहर्रम को फौज ने हम्ला करके सबको

शहीद कर दिया, हज़रत हुसैन रज़ि0 को भी शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलाहि राजिऊन।

हज़रत हुसैन रज़ि0 के बेटे हज़रत ज़ैनुल आबिदीन जो लगभग 20 साल के थे, वह अपनी अहलिया शहरबानों और गोद के बच्चे मुहम्मद बाक़िर के साथ क़ाफिले में थे वह बीमार थे, इसलिए वह बच गये, यज़ीद ने उनका बड़ा इकराम किया था सारे हुसैनी उन्हीं की औलाद हैं।

फिर यह लुटा पिटा क़ाफिला हज़रत हुसैन रज़ि0 के सर के साथ इब्ने ज़ियाद के सामने पहुँचाया गया, इब्ने ज़ियाद ने (उस पर ख़ुदा की लानत हो) हज़रत हुसैन रज़ि0 के सर से बे अदबी की फिर यह लुटा पिटा क़ाफिला दमिश्क़ यज़ीद के सामने पहुँचाया गया, यज़ीद ने ग़म का इज़हार किया और रो दिया और इब्ने ज़ियाद पर लानत भेजी, अब यह क़ाफिला यज़ीद का मेहमान रहा, कितने दिनों मेहमान रहा तारीख में नहीं है, फिर यह क़ाफिला हदाया और तहाइफ के साथ मदीना मुनव्वरा पहुँचा दिया गया। मदीने में उनके घर और जायदादें थीं।

◆◇◆

कुर्आन की शिक्षा .....

मौत के मुंह में जाने जैसा है इसलिए वे आपसे हुज्जत कर रहे थे और वे चाहते थे कि जब अधिकार है तो काफ़िला ही हाथ आ जाए तो बहेतर है इसमें किसी नुक़सान का डर नहीं और अल्लाह का फ़ैसला यह हो रहा था कि इस छोटे जत्थे के द्वारा एक बड़ी सेना को पराजित कर ईमान वालों का रोब दिलों में बैठा दे और सत्य का बोलबाला हो अतः ज़रूरी नहीं कि आदमी जिसको फायदेमंद समझे वह फायदेमन्द हो, फायदा अल्लाह और उसके पैग़म्बर के अनुसरण में है।

3. सूरह आलेइमरान में फ़ौजों की संख्या तीन से पाँच हज़ार की बयान हुई है, यहां एक हज़र का जो उल्लेख है वह ऐसा मालूम होता है आगे रहने वाली टुकड़ी है फिर एक एक हज़ार करके पाँच बार फरिश्तों के दल आते रहे यहां सिलसिलेवार का शब्द इसी लिए प्रयोग हुआ है, आगे यह भी कह दिया कि फरिश्तों को तो दिल के सुकून के लिए भेजा गया, करने वाला तो केवल अल्लाह है।

4. हुआ यह कि काफ़िरों ने पानी की जगहों पर कब्ज़ा कर लिया, मुसलमान जहां थे वहां रेत बहुत थी पांव धंसते थे पानी न होने से वज़ू और नहाने की दिक्कत और इससे बढ़ कर पानी पीने की कठिनाइयाँ, उस समय अल्लाह ने ज़ोर का पानी बरसाया, पानी की सुविधा हो गई रेत जम गई, धूल धप्पा से भी नेजात मिली और चलने फिरने की भी आसानी हो गई, दूसरी ओर काफ़िरों के क्षेत्र में फिसलन पैदा हो गई, इसके साथ ही अल्लाह ने ईमान वालों पर ओंघ डाल दी, उसके बाद सारा भय समाप्त हो गया और दिल मजबूत हो गये।

4. यानी यह तो दुन्या में मार पड़ी, अल्लाह के आदेश से फरिश्तों ने भी मारा और आगे दोज़ख का अज़ाब है।

5.जंग के मैदान से भागना घोर पाप है, हां कोई पैंतरा बदलने के लिए और अधिक तैयारी के लिए पलटे तो कोई हरज नहीं, इसी तरह अगर सेना की कोई टुकड़ी अलग हुई फिर वह वापस आकर फ़ौज में मिलना चाहे तो यह सही है।

❖❖❖

—प्रस्तुति—

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

मानव एकता व समता की परिकल्पना

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) –अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

इन्सानी भाई चारे की ऐतिहासिक घोषणाः–

मानवता के रसूल सल्ल0 की दूसरी बड़ी भेंट और दुन्या पर उनका चिरस्थायी उपकार मानव एकता की परिकल्पना है। आप से पहले इन्सान जातियों व वर्गों के ऊँचे–नीचे तबकों और वर्णों में बँटा हुआ था और वर्ण भेद का अन्तर ऐसा और इतना था जितना मानव और दानव, आज़ाद और गुलाम तथा आराधक व आराध्य का अन्तर हो सकता है। आप से पहले मानव की एकता व समता की परिकल्पना मात्र स्वप्न बन कर रह गयी थी अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने शताब्दियों की ख़ामोशी और छाये हुए अन्धेरे में यह क्रान्तिकारी, बुद्धि को झिझोंड़ देने वाला और समय की धारा को मोड़ देने वाला एलान कियाः–

अनुवादः– *''ऐ लोगो! तुम्हारा रब (पालनहार) एक और तुम्हारा पितामह भी एक है। तुम सब आदम के हो और आदम मिट्टी से थे। तुम में अल्लाह के नज़दीक सबसे ज़ियादा मुत्तक़ी (ईश्वर से डरने वाला) इन्सान है और किसी अरबी को किसी अजमी पर फ़ज़ीलत नहीं, मगर, तक़वा ही के कारण से।''*

इस घोषणा के दो भाग हैं जो शान्ति व सलामती के लिए दो स्तम्भ की हैसियत रखते हैं। एक पालनहार का एक होना, दूसरा मानव जाति का एक होना। इस प्रकार एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का दो रिश्तों से भाई होता है एक रिश्ता जो बुन्यादी है वह यह है कि दोनों का रब एक है, दूसरा यह कि दोनों के बाप (पितामह) एक ही हैं।

अनुवादः– *''ऐ लोगो! अपने परवरदिगार से डरो जिसने तुम सबको एक ही जान से पैदा किया और उससे उसका जोड़ा पैदा किया उन दो से तमाम मर्द और औरतें फैला दीं। और जिस अल्लाह का वास्ता दे कर तुम अपने कितने काम एक दूसरे से निकालते हो उसका डर व लेहाज़ रखो और सगे सम्बन्धियों का लेहाज़ रखो, बेशक अल्लाह तुम्हारी ख़बर रखता है।'' (सूरः निसा–1)*

अनुवादः– *''ऐ लोगो! हमने तुम सब को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी जातें व बिरादरियाँ ठहराईं कि एक दूसरे को पहचान सको। बेशक अल्लाह के नज़दीक तुम में वही ज़ियादा इज्जत वाला है जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है। बेशक अल्लाह खूब जानने वाला है, पूरा ख़बरदार है।''*

(सूरः अलहुजुरात–13)

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः–

अनुवादः– *''अल्लाह ने तुम से जाहिली पक्षपात तथा पूर्वजों पर अभिमान का तरीक़ा खत्म कर दिया है। अब या तो मोमिन मुत्तक़ी होगा या अभागा पापी। लोग आदम की औलाद हैं और आदम मिट्टी से बने थे। अरबी*

को अजमी पर भी कोई फ़जीलत नहीं मगर तक़वा के ज़रिये।''

इसलिए इस्लाम धर्म समस्त मानव जाति और सभी देशों का सामूहिक हक़ और ''राष्ट्र मण्डल'' की हैसियत रखता है जिसमें यहूदियों के 'बनी लाबी' अथवा हिन्दुओं के ब्रह्मणों जैसे किसी को विशिष्ट अधिकार प्राप्त नहीं और न इसमें कोई नस्ल किसी नस्ल पर और न कोई कबीला किसी क़बीले पर प्रधानता रखता है और न इस बरतरी में नस्ल व खून मापदण्ड है। श्रेष्ठता का वास्तविक मापदण्ड व्यक्ति की लगन, परिश्रम व योग्यता तथा संघर्ष में श्रेष्ठता है। इमाम अहमद ने अपनी सनद से बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः—

अनुवादः— *''यदि ज्ञान बुद्ध पर भी हो तो उसे भी ईमान के कुछ सपूत प्राप्त कर लेंगे।''*

अतएव अरबों ने हर युग में धार्मिक ज्ञान में श्रेष्ठअजमी विद्वानों को हाथों हाथ लिया है। उन्होंने उनके गुण ज्ञान का लोहा माना है और ज्ञान के क्षेत्र में उनके नेतृत्व को स्वीकार किया है। और उन्हें सम्मान की ऐसी पदवी दी है जिससे उन्होंने अरब के विद्वानों को नहीं याद किया। उन्होंने इमाम मोहम्मद बिन इस्माईल अलजाफी अल बुखारी (सन् 256 हि0) को अमीरुलमोमनीन फिल्हदीस' की पदवी से सम्मानित किया और उनकी पुस्तक 'अल्जामे अल्सहीह' का कुरआन के बाद सबसे अधिक सही व शुद्ध पुस्तक ठहराया। इसी प्रकार अरबों ने 'नीशापुर' के इमाम अबुल्मआली अब्दुल मालिक' (मृत्यु 468 हि0) को 'इमामुलहरमैन' की पदवी दी और इमाम अबू हामिद मोहमद बिन मोहम्मदुल्ग़ज़ाली तूसी' (मृत्यु 505 हि0) को 'हुज्जतुल इस्लाम' कह कर पुकारा।

इसके अतिरिक्त पहली सदी हिज्री के अन्त में अजमी इस्लामी राजधानियों में मुसलमानों के लीडर बन गये और उन पर ज्ञान (फतवा और फ़िक़्ह— इस्लामी विधि—शास्त्र) व हदीस का दारोमदार था। यह एक सर्व विदित तथ्य है। इस्लाम के इतिहास की पुस्तकों में इसका विवरण मिलता है। और यह उस समय हुआ जो इस्लाम का स्वर्णिम युग था जिसमें अरबों को नेतृत्व प्राप्त था।

प्रसिद्ध विद्वान अब्दुर्रहमान इब्न ख़ल्दून मग़रबी (मृत्यु 808 हि0) लिखते हैंः—

''एक आश्चर्यजनक ऐतिहासिक तथ्य है कि इस्लामी मिल्लत में धर्म शास्त्र व विधि— शास्त्र के अधिकांश विद्वान अजम वाले ही रहे हैं। और अरबों में इनकी संख्या कम है, हालांकि यह मिल्लते अरबी है और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 भी अरबी हैं। व्याकरणचार्य सीबवैह, 'बूअली फारसी' यह सब अजमी थे इसी प्रकार हदीस 'विधि— शास्त्र' और भाषा विज्ञान के पंडित तथा अधिकतर टीकाकार (मुफ़स्सिर) भी अजमी थे।''

बुद्ध नक्षत्र पर से भी ज्ञान प्राप्त करने की बात हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने अपने अन्तिम हज के अवसर पर कही थी जिस समय आप ने यह ऐतिहासिक घोषणा की दुन्या ऐसी नार्मल हालत में न थी कि वह हलचल

शेष पृष्ठ....38 पर.

सहाबा किराम (रज़ि0) की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त

(मौलाना अब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी और उनके ''मदह–ए–सहाबा'' आंदोलन के परिणाम पर महत्वपूर्ण भूमिका)

–हज़रत मौलाना सै0 मु0 राबे हसनी नदवी

लखनऊ शहर में दो सदी पहले रिफ़्ज़ और शीअ़त को प्रचलित और शक्तिवान बनाने पर काम हो रहा था, इसमें विशेष कर नसीराबाद और रायबरेली के कुछ शिअः उलमा की सरपरस्ती प्राप्त थी जिनमें दिलदार अली नसीराबादी का नाम बहुत मशहूर था, और शासन की ओर से सहायता भी मिल रही थी, हज़रत सय्यद अहमद शहीद रहमतुल्लाहि अलैहि ने पहले लखनऊ और अब नसीराबद में रिफ़्ज़ व शीअ़त के मुक़ाबले के लिए क्रियात्मक प्रशासक का नमूना पेश किया और इससे बड़ा सुधार हुआ, अपनी जमाअत के साथ लखनऊ के क़ियाम और सफ़र में दअ़वत, इस्लाह की कोशिश जारी रखी, जहां उनका क़ियाम टीले वाली मस्जिद में रहा और उनके साथ हज़रत मौलाना शाह इस्माईल शहीद रह0 और दूसरे उलमा भी थे, मौलाना अब्दुलहई बुडढान्वी के हर दर्स में दो चार शिअः हज़रात ज़रूर तौबा करके अहले सुन्नत वल जमाअत में दाख़िल होते थे। नवाब मोतमदुद्दौला को शिकायत पहुँची तो उन्होंने जंग की धमकी दी, तो हज़रत सय्यद साहब ने कहलवाया ''वअ़ज़ व इरशाद'' हमारी ज़िम्मेदारी है, मुझे कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा, अल्लाह मेरा मददगार है और फिर मोतमदुद्दौला आग़ामीर को जा कर हज़रत सय्यद साहब ने ख़ुद नसीहत की और बुरे आमाल और ज़ुल्म व सितम से तौबा कराई, मोतमदुद्दौला आग़ामीर ने हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु के बारे में कुछ सवालात किये, मगर हज़रत सय्यद अहमद शहीद रह0 के भरपूर बयान के बाद वह और सभी शीआ हज़रात ख़ामोश हो गये और कुछ बन न पड़ा और मौलाना अब्दुलहई बुडढानवी ने उनकी एक मजलिस में प्रभावशील वअ़ज़ कहा, हाकिमे अवध नवाब ग़ाजीउद्दीन हैदर (सनः जुलूल 1229 हिजरी) ने भी मिलना चाहा मगर उनके दरबारी रुकावट बन गये, वरना नक़्शा ही कुछ और होता, यह 1234 हिजरी की बात है।

हज़रत सय्यद अहमद शहीद रह0 फिर दूसरे इसलाही, दअ़वती दौरों और तरबियत व तज़किया व इरशाद के अमल में लग गये और इस रुख़ की सरपरस्ती इख़्तियार की, और उनकी दअ़वत व सुधार का क्षेत्र केवल रायबरेली और लखनऊ ही न रहा बल्कि देश का अधिकांश इलाक़ा उनका और उनके ख़ुलफ़ा (प्रतिनिधियों) का कार्य क्षेत्र बन गया, रायबरेली से क़रीब वहाँ फ़तेहपुर में जहां उनकी रिश्तेदारी थी, उनके एक विशेष मुरीद मौलाना सय्यद सिराजुद्दीन हँसवी थे जो हज़रत मौलाना शाह अब्दुस्सलाम हँसवी के मुरब्बी (अभिभावक) चचा और ससुर भी थे, हज़रत मौलाना अब्दुस्सलाम हँसवी के रिफ़्ज़ व शीअ़त के खण्डन में लाभकारी पत्रिकाएं भी हैं जैसेः– ''तज़किर–ए–इस्नाअशअरी'' और ''तफ़ज़ी–हु–शशिअः'', उनके ख़ुलुफ़ा और शागिरदों में एक अहम और प्रसिद्ध नाम मौलाना

नाज़िर अली काकोरवी रह0 का है जिन्हें अपने शेख़ से गहरा लगाव था और अपने बेटे हज़रत मौलाना अब्दुशशकूर फ़ारूक़ी लखनवी को उनकी ख़िदमत में पेश किया और जब वह कुछ बड़े हुए तो हज़रत से ही ''बिस्मिल्लाह'' कराई।

मिल्ली ख़ातरों का एहसास और सच्चाई के लिए कोशिश और फ़िक्र और अक़ीदे की अनुभव शक्ति उनके लोगों में मौलाना नाज़िर अली काकोरवी और उनके खानदान के अन्य लोगों में ख़ास तौर पर आई, और उन बुजुर्गों ने सच को जाहिर करने और झूठ का खण्डन करने और अक़ीदे के सुधारने में बड़ा हिस्सा लिया, उनमें उनके महान बेटे इमाम अहले सुन्नत हज़रत मौलाना अब्दुशशकूर फ़ारूक़ी रह0 ने इसको अपना मिशन और सब से अहम दीनी फ़रीज़ा समझ कर अपनी इल्मी सलाहियतों को इसमें लगाया जिसमें उनके बड़े सहयोगी खुद उनके भाई मौलाना अब्दुर्रहीम रह0 और बेटे, भतीजे, शागिर्द रहे।

हज़रत मौलाना अब्दुशशकूर फ़ारूक़ी (लखनऊ) रह0 अपनी दीनी सहयोग और दीनी सम्मान के सम्बन्ध में इल्मी लिहाज़ से भी विशेष व्यक्ति थे, उन्होंने इस दीनी खिदमत के रास्ते में ध्यान पूर्वक परिश्रम किया और लोगों के भ्रामक विचारों का सुधार किया, वरना एक ओर अवध की शिअः गवर्नमेन्ट और उसके प्रभाव, दूसरी ओर नसीराबाद और रायबरेली से आये उलमा के प्रभाव से यहां शीअ़त का ज़बरदस्त असर और रुसूख़ हो जाता, और यहां के सुन्नी लोग जो बड़ी संख्या में मौजूद थे, उनको शीअत के प्रचार का शिकार होना पड़ता, हज़रत मौलाना अब्दुशशकूर रह0 को अपने वालिद मौलाना नाज़िर अली काकोरवी और फिर अपने उस्तादों व मुर्शिदों ख़ास तौर पर हज़रत शाह ऐनुल कुज़ात लखनवी रह0 (वफ़ात–1344 हि0) और हज़रत शाह अबू अहमद भोपाली मुजद्दिदी (वफ़ात 1342 हि0) से जो फ़ैज हासिल हुआ था, उससे उनको दीन की सहायता और सम्मान और उसे शक्तिवान बनाने के काम में बड़ी मदद और रहनुमाई मिली।

शिअः फ़िरक़े की आबादी भी लखनऊ और अवध के आस पास क्षेत्रों में बहुत थी इसके अतिरिक्त शासन की वजह से उसका असर भी, और अहले सुन्नत को इसकी वजह से अक़ीदा व अमल और अपने दूसरे मुआमलात में परेशानी का सामना था, हज़रत मौलाना अब्दुशशकूर फ़ारूक़ी ने इन ख़तरात को देख कर उसकी रोक थाम के लिए अपने इल्म व हिम्मत को इस काम में लगा दिया और उसी इलाक़े ''पाटा नाला'' के महल्ले में अपना मरकज़ बनाया और वहीं से उन्होंने सुन्नत की तलक़ीन (उपदेश) और सुन्नी मसलक का काम अंजाम देना शुरु किया, उनके काम की बड़ी विशेषता यह थी कि उसमें सहाबा किराम रज़ि0 की महानता और प्रधानता को ज़ाहिर करने के साथ साथ सहाब–ए–किराम और अहले बैते इज़ाम का सम्मान भी क़ाबिले लिहाज़ था। इसको पूरे तौर पर बरक़रार रखा, जैसा कि उनके लेखों और पुस्तकों से ज़ाहिर और विदित है।

शिओं की ओर से अहले सुन्नत के लिए जो परेशानी और तकलीफ़देह बात थी कि वह केवल मसलकी विरोध तक न थी बल्कि वह हज़राते सहाबा व शेख़ैन (हज़रत अबू बकर रज़ि0,

हज़रत उमर रज़ि0) की निन्दा और अपमान का रवय्या इख़्तियार करते थे जिसको अहले सुन्नत से वाक़िफ़ और परिचित लोग देख कर और सुन कर क़ाबिले कुबूल नहीं समझते थे, इसी के प्रभाव से यहां लखनऊ में अहले सुन्नत व शिअः की कश मकश बढ़ी हुई थी, इस विषय में मशहूर आलिम व लेखक हज़रत मौलाना मु0 मंज़ूर नोमानी रह0 जिन्होंने हज़रत मौलाना अब्दुश्शकूर रह0 के साथ रहे, कहते हैंः–

सहाबा किराम के नामूस (मर्यादा) की हिफ़ाज़त और उनके ख़िलाफ़ प्रोपेगण्डे की तरदीद (खण्डन) बजाये ख़ुद भी इबादत बल्कि फ़रीज़ह (कर्तव्य) है, लेकिन मैं जो इसको दरजा अव्वल की हैसियत देता हूँ और इसमें इस तरह मशगूल हूं, ख़ुदा गवाह है कि उसकी वजह यह है कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के मजरूह (अविश्स्नीय) हो जाने के बाद कुरआन मजीद और नबूव्वते मुहम्मदी स0अ0व0 सब मशकूक (संदिग्ध) हो जाते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और कुरआन के बारे में जो कुछ हम जानते हैं वह सहाबा किराम रज़ि0 के वास्ते जानते हैं, अगर इस सिलसिले में पहली कड़ी और दीन के नाक़िलों (दूसरों तक पहुँचाने वालों) की पहली सफ़ ही नाकाबिले भरोसा हो गई तो कुरआन मजीद और सारा दीन मशकूक (संदिग्ध) हो जायेगा और हमारे पास यक़ीन की कोई इल्मी बुन्याद नहीं रहेगी, बहरहाल मैं सहाबा किराम रज़ि0 की यह हिमायत (समर्थन) और रक्षा और उनके दुशमनों का यह मुक़ाबला कुरआन मजीद और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इज़्जत व अज़मत की हिफ़ाजत की नियत ही से करता हूँ और मुझे अपनी मग़फ़िरत की सबसे ज़ियादा उम्मीद अपने इसी अमल से है।

हज़रत मौलाना मुहम्मद मन्जूर नोमानी रह0 ने उनके इस अमल में बहुत ज़ियादा इनहिमाक (लीन्ता) और इस विषय पर तसनीफ़ात व तहक़ीक़ात और इल्मी मुनाज़रों में हिस्सा लेने के बावजूद और उनके बहुत ज़ियादा एतिदाल (संतुलन) और अहले बैत के हक़ को पूरा लिहाज़ रखने की विशेषता का ज़िक्र भी किया है जिसे उनकी किताब ''तहदीसे नेमत'' में देखा जा सकता है कि एक मौक़े पर हज़रत अली मुरतज़ा रज़ि0 और हज़रत मुआविया रज़ि0 के दरजात का फ़र्क बयान करते हुए इरशाद फ़रमायाः–

हज़रत अली मुरतज़ा रज़ि0 ''साबिक़ीने अव्वलीन'' में भी पहली सफ़ के बड़ों में हैं और हज़रत मुआविया रज़ि0 अगरचे सहाबी होने की हैसियत से हमारे सरताज हैं लेकिन हज़रत अली रज़ि0 से उनको क्या निस्बत (जोड़)? उनकी मजलिस में अगर जूता रखने की सफ़ में भी हज़रत मुआविया रज़ि0 को जगह मिल जाये तो उनके लिए सौभाग्य और गर्व की बात है''।
(तहदीस–ए–नेमत पेज नं0 346)

हज़रत मौलाना अब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी रह0 की मेहनत को एक नवीनीकरण स्तर का काम समझा गया और अहले हक़ ने उसको बहुत सराहा, इसमें स्थानीय अहले सुन्नत उलमा और लखनऊ के बाहर के जानने वाले लोगों ने हज़रत मौलाना की इस विशेषता को एक प्रकार की नवीनीकरण प्रयास व कारनामा समझा हज़रत मौलाना की दीनी व इल्मी कारगुज़ारी उनकी तक़रीरों और उपदेशों, वअ़ज़ व नसीहत और पुस्तकों में फैली हुई नज़र आती है,

उनके विरोधियों में कुछ ने सरसरी नज़र से हज़रत मौलाना के इस अमल को मसलकी पक्षपात ज़ाहिर करने की कोशिश की, लेकिन मौलाना की ख़ुद अपनी किताबों में जो चीज़ें हैं उनमें हज़रात सहाब–ए–किराम रज़ि0 और अहले बैत रज़ि0, सादाते इज़ाम के बलन्द मुक़ाम को विशेष रूप से बयान किया है और उसमें गुमराही को राहे हक़ से अवज्ञा क़रार दिया है।

हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास कांधलवी रह0 जब अपने इंतिक़ाल से ठीक एक साल पहले 1943 ई0 में एक बड़ी जमाअत के साथ लखनऊ तशरीफ़ लाये और कानपुर और हमारे वतन रायबरेली भी गये थे और लखनऊ दारुलउलूम नदवतुल उलमा में क़ियाम फ़रमाया जहां से वह शहर के विभिन्न जगहों पर तशकील वग़ैरह के लिए जाते और उलमा की ख़िदमत में अपनी मुलाक़ात के लिए जाते, चुनांचे वह हज़रत मौलाना अब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी रह0 से वक़्त लेकर उनकी ख़िदमत में भी गये और उनके बारे में अपना एक तअस्सुर (प्रभाव) दारुलउलूम नदवतुल उलमा के बाज़ हज़रात के सामने ज़ाहिर किया, इस तअस्सुर को मौलाना मुहम्मद मन्जूर नोमानी रह0 इस तरह बयान करते हैं ''इस ज़माने के तसलीम शुदा बुज़ुर्ग बल्कि यक़ीन व मअ़रिफ़त के इमाम हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास रह0 के एक इरशाद पर तअस्सुरात के इस सिलसिले को ख़त्म करता हूँ कि एक रोज़ वह दारुलउलूम की मस्जिद के वज़ू ख़ाने में वज़ू फ़रमा रहे थे और तक़रीबन एक हफ़्ता दारुलउलूम नदवतुल उलमा में क़ियाम फ़रमाया था, दारुलउलम के दो तीन असातिज़ह भी साथ बैठे वज़ू कर रहे थे मौलाना मुईनुल्लाह नदवी (साबिक नायब नाज़िम, नदवतुल उलमा) मौलाना के बिल्कुल सामने बैठे वज़ू कर रहे थे, हज़रत मौलाना की उन पर शफ़क़त व इनायत की ख़ास नज़र थी। उनसे मुखातब हो कर फ़रमाया मियां मोलवी मुईनुल्लाह! हज़रत मौलाना अब्दुश्शकूर को जानते हो? उन्होंने अर्ज़ किया हाँ, हज़रत, जानता हूँ, ज़ियारत भी की है, फ़रमाया, नहीं तुम नहीं जानते, फिर फ़रमाया वह इमामे वक़्त हैं, लखनऊ के इसी सफ़र में नाचीज़ लेखक भी हज़रत मौलाना मु0 इल्यास रह0 के साथ था एक मौक़े पर मोलवी नूर मुहम्मद से फ़रमाया कि इन मशरक़ी दयार (पूर्वी उत्तर प्रदेश) में हज़रत मौलाना अब्दुश्शकूर साहब का वही मुक़ाम है जो हमारे मग़रवी दयार (पश्चिमी उत्तर प्रदेश) में हज़रत थानवी रह0 का था। (तहदीसे नेमत पे0 351–352)

जहाँ तक मौजूदा ज़माने के दूसरे मशाएख़ बुज़ुर्ग व उलमा के एतराफ़ व गवाही का तअल्लुक़ है तो हज़रत मौलाना अब्दुल क़ादिर राय पुरी का यह एतराफ़ व गवाही ही काफ़ी है जिसे हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी रह0 ने लिखा है कि ''हज़रत को सहाबा किराम रज़ि0 से इश्क़ था, और रिफ़्ज़ से बड़ी नफ़रत थी, हज़रत रायपुरी ने मौलाना के बहुत से रिसाले पढ़वा कर बड़े ध्यान से सुना था। लखनऊ के क़ियाम में एक बार मौलाना हज़रत रह0 से मिलने को नदवा भी तशरीफ़ लाये, जहां हज़रत का क़ियाम था, लाहौर में भी 1960 ई0 में हज़रत का क़ियाम सूफ़ी साहब की कोठी पर था, मौलाना तशरीफ़ लाये थे, और जब मौलाना अब्दुश्शकूर रह0

शेष पृष्ठ.....28.पर....

फ़िलिस्तीन की समस्या

–मौलाना सय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (रह०)

–हिन्दी लिपिः गुफ़रान नदवी

शक्तिशाली ईमान की ज़रूरतः–

इस समय मीडिया पर यहूदियों का कन्ट्रोल है, भारत वर्ष भी इससे अलग नहीं है, पूर्ण विश्वास के साथ यह बात कही जा सकती है कि हमारे समाचार पत्र और पत्रिकायें यहूदी मीडिया के अधीन हैं और यह बात इस से स्पष्ट हो जाती है कि, कोई लेख या पत्र यदि यहूदियों के विरुद्ध लिखा जाता है तो उसको छापने से इनकार कर दिया जाता है कभी उसकी वजह बता दी जाती है और कभी खामोशी इख़्तियार की जाती है। अख़बारों में ऐसी खबरें भी आती हैं कि अधिकांश अख़बार स्वतंत्र हैं और अमरीकी इशारे के पाबन्द नहीं है हालांकि वह अमरीका के आज्ञाकारी हैं, स्वयं अमरीकी प्रेस यहूदियों के कब्ज़े में है और अमरीका की गरदन यहूदियों की पकड़ में है उन्होंने मीडिया और आर्थिक साधनों द्वारा बड़ी ताक़तों के अधीन बना रखा है, यही वजह है कि वास्तविक सूरते हाल से हम परिचित नहीं हो सकते।

गज़्ज़ह की जंग (2009 ई0) में फ़िलिस्तीनियों ही को ज़ालिम क़रार दिया गया, हालांकि बड़ी मात्रा में नुक़सान से हर शख़्स अन्दाज़ा लगा सकता है, कि उनका जानी नुक़सान एक हज़ार से ऊपर हुआ, और यहूदियों का नुक़सान जो बताया जाता है वह केवल तेरह है, इससे हर शख़्स समझ सकता है कि ज़ालिम कौन है और मज़लूम कौन? फिर जो आर्थिक नुक़सान हुए उससे सम्बन्धित समाचार बहुत सावधानी से दिये जाते हैं, जब कि बड़ी मात्रा में उनके मकानात तबाह हो गये, इस समय भी सर्दी के मौसम में कुछ लोगों के पास रहने के लिए मकानात नहीं हैं, अभी अरबी समाचार पत्रों में एक खबर छपी है कि कुछ लोगों को ठन्ढी हवा से बचने के लिए खिड़कियों और दरवाज़ों को बन्द करने के लिए दफ़्ती और काग़ज़ लगाने पड़ रहे हैं, यह वह ख़बरें हैं जो हम तक पहुँचती ही नहीं।

इस वक़्त ख़बरें आ रही हैं कि मस्जिद अक़्सा को ख़तरा है, कोशिश की जा रही है कि मस्जिद को गिरा करके ''हैकले सुलैमानी'' का निर्माण किया जाये, इसके लिए नाना प्रकार के उपाय किये जा रहे हैं, कभी जांच के नाम पर नीचे खुदाई की जाती है कभी मुसलमानों को उसमें नमाज़ पढ़ने से रोका जाता है, अभी ख़बरें आईं कि उनको नमाज़ पढ़ने से रोक दिया गया, और उनमें यहूदी ज़बरदस्ती घुस गये इससे पहले आग लगाने की कोशिश की गई जिसमें हिन्दुस्तान में बड़ा हंगामा हुआ था और दंगे हुऐ थे।

मस्जिदे अक़्सा की समस्या केवल अरबों की समस्या नहीं, यह दुन्या के तमाम मुसलमानों की समस्या है, फ़िलिस्तीन के बारे में तो कहा जा सकता है कि वह अरबों की समस्या है और उसमें अरबों की कोताही का बड़ा दख़ल है क्योंकि इसराईल की स्थापना यूं ही अमल में नहीं आयी, यहूदी छल कपट एक वास्तविकता है, लेकिन इस छल कपट से यहूदी कोई बड़ा फ़ाइदा नहीं उठा सके, न वह

कभी प्रभुत्वशाली क़ौम रहे, हमेशा मारे मारे फिरे दुन्या में कहीं उन्हें इज्ज़त, और उच्चता नहीं प्राप्त हुई, अगर मक्कारी से किसी को फ़ाइदा पहुँचता तो मक्कार आदमी हमेशा कामयाब होता, जबकि ऐसा नहीं है, कुर्आन मजीद कहता है ''और उन्होंने अपनी चालें चलीं और उनकी सब चालें अल्लाह के यहाँ हैं और वह चालें ऐसी (ग़ज़ब की) थीं कि उनसे पहाड़ भी टल जाते'' (सूरः इब्राहीम–46) तो मक्र (छल कपट) से कुछ नहीं होता।

कहा जाता है कि ब्रिटिश बड़ा मक्कार है लेकिन हाल उसका अब यह है कि वजूद ही उसका खतरे में है, किसी समय भी ब्रिटिश इमपाइर तीन हिस्सों में बट सकता है, इसलिए कि स्काट लैण्ड, आइर लैण्ड, और इंग्लैण्ड में ऐसी असमन्जस और शत्रुता है कि यदि एक क्षेत्र का आदमी दूसरे क्षेत्र में जाता है तो वह उस क्षेत्र की ओर अपना सम्बन्ध नहीं बताता क्योंकि फिर उसके साथ समानता का व्यवहार नहीं किया जायेगा, यह है उस देश का पक्षपात, उसकी आर्थिक स्थिति ऐसी है कि यदि अरब अपनी पूँजी वापस ले लें तो ब्रिटिश इम्पाइर ढेर हो जाये, आर्थिक और राजनैतिक दोनों पहलुओं से ब्रिटिश शासन बहुत ही कमज़ोर है नैतिक भ्रष्टाचार सब पर स्पष्ट है, छल कपट से ज़ियादा दिनों तक क़ौमें कामयाब नहीं हो सकती, कुछ दिन तक धोखा दे सकती हैं।

इसराइल की स्थापना के बहुत से कारण हैं, एक तो यह है कि उसको कुछ शक्तिशाली देशों ने गोद में ले कर और अरबों के हाथ पैर बांध कर उनके कांधों पर बिठा दिया और उसके बाद से अब तक उसकी रक्षा कर रहे हैं, इस प्रकार इसराईल की स्थापना हुई, यह विचार बहुत ग़लत है कि इसराईल को उत्तमता प्राप्त है, उदाहरण द्वारा आपके सामने यह बात रखी जा सकती है कि अब तक जितनी भी जंगें हुईं उनका आप जाइज़ा लीजिए, इसराईल को कामयाबी वहीं हुई, जहां उसके सामने वाले ने कमज़ोरी दिखाई, अभी हाल में एक अंग्रेज़ी किताब देख रहे थे। जिसमें बहुत से देशों के बोर में विस्तार से लिखा गया है, उसका लिखने वाला मुसलमान नहीं है बल्कि उसका लिखने वाला बरतानिया का कोई विद्वान है, बहुत पुरानी किताब है, उसने यह लिखा है कि सन 1948 ई0 में इस्राईल की स्थापना किस तरह हुई? उसने लिखा है कि यहूदियों की ताक़त बहुत कम थी, जब फ़िलिस्तीन बरतानिया के क़ब्ज़े में था, उस समय उसने तै कर लिया था कि इस्राईल की स्थापना यहां होगी ताकि अरबों पर कन्ट्रोल रहे, यह बरतानिया की पालीसी रही है कि जहां से उसे जाना पड़ा, वहां वह कोई फ़ितना (उपद्रव) छोड़ कर गया ताकि उसको बार बार आ कर उसके समाधान करने का अवसर मिले, जैसे एक क़िस्सा है कि एक व्यक्ति ने अपना मकान बेचा और मकान ख़रीदने वाले से कहा कि मकान तो पूरा आपका है, लेकिन उसमें फ़लां कमरे में एक खूँटी है वह हमारी रहेगी और हमें उसके प्रयोग करने की पूरी स्वतंत्रता रहेगी, ख़रीदने वाले ने सोचा कि एक खूँटी का मुआमला है कोई बाधा नहीं, और इजाज़त दे दी, अब वह हर दूसरे तीसरे दिन आता और कहता था कि हम उस खूँटी को देखना चाहते हैं, हम उसमें अपना कोट टाँगेंगे, आख़िर कार परेशान हो कर ख़रीदने वाला इस बात पर मजबूर हो गया कि वह मकान वापस कर दे।

इसी प्रकार बरतानिया ने यह किया कि जिस मुल्क में वह रहा अपनी खूँटी छोड़ गया। और उस खूँटी के जरिये उसको मौक़ा मिलता रहा हस्तक्षेप करने का, और उन क़ौमों में इतनी हिम्मत नहीं है उस मकान को पूर्ण रूप से आज़ाद करा सकें या खूंटी निकाल कर उसके सर पर ठोंक दें और उसके बाद कहें कि खुद भी जाओ और अपनी खूंटी भी ले जाओ।

जब यह हिम्मत पैदा हो जायेगी उन मुसलमान मुल्कों में या उन अरब मुल्कों में जो इसराईल को झेल रहे हैं तो उस समय इस्राईल का वजूद ख़तरे में पड़ जायेगा।

सन् 1948 ई0 की जंग के बारे में एक अंग्रेज़ इतिहास कार ने लिखा है कि इस्राईल की कोई फ़ौजी ताक़त नही थी और चार पाँच अरब मुल्क उसके मुक़ाबले पर थे, लेकिन यह मुक़ाबला दिखाने में था, अरब फ़ौजों को हुक्म था न लड़ने का, और बाद में जब कुछ और मुजाहिदीन जो आगे बढ़ गये और इस्राईल के लिए ख़तरा बन गये थे तो उन फ़ौजियों को हुक्म दिया गया फ़ौरी वापसी का और अवज्ञा की सूरत में उनके अफ़सरों को हुक्म था कि उनको शूट कर दिया जाये।

सन् 1967 ई0 की जंग का भी हाल सुन लीजिए, धोखा ही धोखा, शासकों ने धोखा दिया, फ़ौजों ने धोखा दिया, जनरलों ने धोखा दिया क्योंकि जो जनरल थे या तो बरतानिया के थे, या फ्रांस के थे या यूरोप के एडवाइज़र थे, उनको लड़ने से रोक दिया गया, किताब में उसने लिखा है कि अरब संख्या में ज़ियादा थे परन्तु वह पराजित हुए वह लिखता है कि अरबों में एकता नहीं थी, वह विश्वास घातक थे, उनके पराजित होने के यही कारण हैं।

1952 ई0 में मिस्री क्रान्ति में असफलता का यही कारण था। सेना को अयोग्य शस्त्र दिये गये और उनके साथ विश्वास घात किया गया और उनको जंग करने से रोका गया।

1948 ई0 और 1956 ई0 की जब लड़ाई हुई, नहर स्वेज़ को जमाल अब्दुल नासिर ने जब नेशनलाइज़ किया तो तीन देशों इस्राईल, फ्रांस और बरतानिया ने मिस्र पर आक्रमण किया, और मिस्र खतरे में पड़ गया, हालांक मिस्र ने पूरा मुक़ाबला किया जमाल अब्दुल नासिर इसी वजह से ''हीरो'' बने फिर रूस ने हस्तक्षेप किया, अमरीका ने साथ दिया, अमरीका ने भी कहा तुम लोग अपनी फौजें वापस ले जाओ, रूस ने वारनिंग दे दिया तो मिस्र से फौज़ें वापस ले जानी पड़ीं, इस जंग में इस्राईल फ्रांस और बरतानिया की मदद से मिस्र के अन्दर तक पहुंच गया था, और फिर उसने बड़ा नरसंहार किया और बड़ी ताक़तों ने उसका साथ दिया।

इसी प्रकार 1967 ई0 में क्या घटना घटी दुन्या के सामने है, इस्लामी विचारक हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी रह0 ने अपने एक अरबी पत्रिका में लिखा है कि 1967 ई0 की जंग में अरब और मिस्री फ़ौजों के साथ किस तरह मज़ाक किया गया, मिस्री फ़ौजें प्रायद्वीप सीना को पार कर रही थीं इतने में इसराईल के हवाई जहाज़ आते हैं और मिस्र के हवाई अड्डों को तबाह करके चले जाते हैं क्योंकि उन्होंने इतनी भी फिक्र नहीं की थी कि अपनी हवाई फ़ौजों को तैयार रखते और अपने हवाई अड्डों की हिफ़ाज़त करते और यही चीज़ जमाल अब्दुल नासिर के पतन

का कारण बनी, लेकिन यही मिस्री फ़ौज 1973 ई0 में ''बारलीफ़ लाइन'' को पार करके इस्राईल के अन्दर दाख़िल हो गई और इस्राईल ने अमरीका से फरयाद की, यह इतिहास का एक वाक़िआ है, अगर आप इस वाक़िए को पढ़ेंगे तो मालूम होगा कि उस समय इस्राईली लीडरों की क्या हालत हुई, उन्होंने अमरीका से फरयाद की, कि हमको बचाइये, हम गये, इस्राईल के अन्दर मिस्री फ़ौजें दाखिल हो चुकी थीं, इस्राईल उस समय पूरे खतरे में पड़ गया था, चुनांचे अमरीका ने प्रत्यक्ष हस्तक्षेप किया और जहां मिस्री फ़ौज थी वहां अमरीका ने अपनी फ़ौज उतार दी और इस प्रकार उसने इस्राईल की रक्षा की।

यही मिस्री फ़ौज जो 1967 ई0 में प्राजित हुई थी, उसी हारी हुई फ़ौज ने 10 रमज़ान की जंग में ''अल्लाहु अकबर'' का नारा लगाया और ''नहर स्वेज'' को पार कर लिया और इस्राईल ने अपनी रक्षा के लिए जो (मार्ग अवरोध) बनाया था जिसे इस्राईल नाक़ाबिले तस्ख़ीर (अजेय) कहता था कि इस डिफेंस लाइन को कोई पार नहीं कर सकता, मिस्री फ़ौज ने, न केवल उसको पार किया बल्कि उसके मुल्क में दाख़िल हो गई, जब मिस्री फ़ौज को मौक़ा मिला, और जब उनमें इरादा और ईमानी जज़बा (भावना) पैदा हो गया तो उसी फ़ौज ने जो उससे पहले हार चुकी थी, शत्रु को परास्त करने में सफलता प्राप्त कर ली, उसके बाद लबनान में हिज़्बुल्लाह से जो जंग हुई और उसके बाद 2009 ई0 में ग़ज़्ज़ह में जो जंग हुई, इस्राईल ने कहा था कि हम निर्णायक जंग कर रहे हैं, हम जब तक विजय न पा लें, तब तक छोड़ेंगे नहीं, लेकिन इस्राईल को पीछे हटना पड़ा और वह इलाक़ा सुरक्षित रहा और अब भी सुरक्षित है, इस्राईल ने उसकी घेराबन्दी कर रखी है, पानी बन्द कर रखा है, सारी पाबन्दियों और दुशवारियों के बावजूद फ़िलिस्तीनी क़ौम जिसमें ईमानी जज़्बा है, उस ईमानी जज़्बे से मुक़ाबला कर रही है इसलिए यह नहीं समझना चाहिए कि इस्राईल अपनी चालाकी या फ़ौजी ताक़त की वजह से अपराज्य हैं। ईमान और इरादे की मज़बूती जब भी पैदा होगी इनशाअल्लाह उसका वजूद मिट जायेगा चाहे जितने देश उसकी रक्षा करें।

जब मिस्र तने तनहा जीत सकता है, जब हिज़बुल्लाह जो शाम में छोटा सा ग्रुप है, इस्राईल को घुटने टेकने पर मजबूर कर सकता है, जब ग़ज़्ज़ह की गोलियों में तपे हुए नौजवान इस्राईल को नाकों चने चबवा सकते हैं तो इस्राईल को घेरे में लिए हुए यह चार पाँच अरब मुल्क तो इस्राईल का नाम व निशान मिटा सकते हैं, इस्राईल के एक लीडर ने हाल ही में यह बयान दिया है कि हमें डर एटम बम से नहीं, डर हमें ईमानी कूवत से है, हमारे लिए ख़तरा यही इख़वनी मुजाहिदीनी हैं, जब इनको मौक़ा मिलेगा यह हमारे लिए ख़तरा बनेंगे, हमारे लिए खतरा एटम बम या फ़ौजी ताक़त नहीं।

इस वक़्त ज़रूरत मसअले फ़िलिस्तीन से वाक़िफ़ कराने और मुसलमानों में शुऊर (चेतना) पैदा करने की है, इसलिए कि वाक़फ़ियत (ज्ञान) के बाद ही चेतना पैदा होती है, और शुऊर (चेतना) के बाद अमल और इरादे की कूवत पैदा होती है।

❖❖❖

इन्सानी ज़िंदगी और क़लम की ताक़त

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

मक्का मुकर्रमा में नुज़ूले ''वही'' के वक़्त सब से पहले जो सूरत हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल हुई, उसमें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के नाम के साथ क़लम का भी ज़िक्र है अल्लाह तआला ने इंसान को खून के लोथड़े से पैदा किया, फिर उस को बुद्धि और चेतना (ख़ैर व शर) में फ़र्क़ करने की सलाहीयत, पढ़ने और मन की बात कहने लिए कूव्वते बयान से नवाज़ा, और इंसान को उन चीजों की तालीम दी जिन्हें वह नहीं जानता था, और हक़ीकत भी यही है कि इन्सान इल्म व तालीम और सभ्यता और संस्कृति के तमाम वसाइल से ख़ाली होने की सूरत में इंसान नहीं रहता।

मक्का मुकर्रमा ही में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वही उतरने का सिलसिला शुरु होता है, नुबुव्वत के शुरुआती दौर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सच्चे ख्वाबों के ज़रीआ बशारत दी गई, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल में एकान्तवास की महब्बत डाल दी गइ चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तने तन्हा ग़ारे हिरा तश्रीफ़ ले जाते और वहां अल्लाह से लौ लगाते और इबादत व दुआ में मशगूल हो जाते, सही बुख़ारी की एक तवील हदीस में इस बात की सराहत है, उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि0 फरमाती हैं कि सबसे पहले जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वही की गई वह सच्चे ख़्वाब थे, आप का हर ख़्वाब सुब्ह के फूटने की तरह सच्चा साबित होता था, फिर आपके दिल में ख़लवत नशीनी महबूब बना दी गई, आप तने तन्हा कई कई दिनों तक गारे हिरा जा कर इबादत करते, साथ में खाने पीने का सामान भी ले जाते, फिर हज़रत ख़दीजा रज़ि0 के पास तश्रीफ़ लाते और गुज़रे दिनों के मिस्ल तोशा ले जाते, यहां तक कि एक दिन जब आप गारे हिरा में तश्रीफ़ फरमा थे, अचानक हक़ का पैग़ाम आपके पास आया, और (वह इस तरह कि एक फरिश्ता आपके पास आया और उसने कहा पढ़ो! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं फिर फरिश्ते ने आप को पकड़ा और ज़ोर से दबाया, यहां तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सब्र का पैमाना लबरेज़ हो गया, फिर उसने आपको छोड़ दिया और कहा पढ़ो! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं, फिर फरिश्ते ने दूसरी मर्तबा आपको पकड़ा और ज़ोर से दबाया, यहां तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सब्र का पैमाना लबरेज़ हो गया, फिर उसने आपको छोड़ दिया और यह आयत तिलावत की ''पढ़ो अपने परवरदिगार के नाम के साथ जिस ने सबको पैदा किया है, जिसने इंनसान को खून के लोथड़े से पैदा किया, आप कुर्आन पढ़ा कीजिए और आपका परवरदिगार बड़ा करीम है, जिसने क़लम के ज़रीआ से तालीम दी, और इन्सान को उन

चीज़ों की तालीम दी जिन्हें वह नहीं जानते थे।''

(सूरतुल अलक़: 1/5)

प्रारम्भिक काल ही से क़लम की क़द्र व क़ीमत और अज़मत आम जनमानस में तस्लीम शुदा है, इन्सान की रिफअ़त व बुलन्दी में उस का बुन्यादी रोल रहा है, क़लम अफ़ज़ल तरीन आला है और हर अज़मत व क़ीमत वाली चीज़ की तश्कील के लिए बेहतरीन बुन्याद है, अल्लाह तआला ने इन्सान को इन्सानियत का जो लिबास अता किया है और जिस ख़िलाफते अर्ज़ी से नवाज़ा है क़लम उसके सामने सर झुका लेता है, किताब व सुन्नत में जिन अवामिर व नवाही की वज़ाहत की गई है क़लम उनके सामने सज्दा रेज है।

तारीख़ इन्सानी में एक ऐसा ज़माना भी गुज़रा है, जिसमें इन्सानियत सीधी राह से मुनहरिफ़ थी, ज़िन्दगी ग़फ़लत में गुज़र रही थी, यह तारीख़ी ज़माना जाहिलियत काल के नाम से जाना जाता है, जिसकी इब्तिदा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी बना कर भेजे जाने से बहुत पहले हुई थी, तारीख़ ने उस ज़माना के, जिसमें जिन्दगी सिराते मुस्तक़ीम से मुनहरफ़ि थी, और ख़्वाहिशात नफ़्स और शैतान मलऊन की पैरवी की जाती थी, अहवाल कुछ यूं बयान किये हैं कि यह ज़माना इन्सानी इम्तियाज़ात की तारीख़ में सबसे तारीक ज़माना है, अगर उस ज़माना में अल्लाह तआला लोगों को गुमराही से रौशन ईमान की तरफ़ आने का आखिरी मौक़ा न देता, और एक रौशन चिराग़ से पूरे आलम को मुनव्वर न करता तो पूरी इन्सानियत बुत परस्ती, औहाम परस्ती और दीगर ख़ुराफात के तले दबी होती।

लेकिन अल्लाह तआला ने भटकती हुई इन्सानियत और छः सौ सदी पर फैली हुई जाहिली दुन्या को एक आखिरी मौका देने का इरादा किया, ताकि एक खुश बख़्त इन्सानी जिन्दगी वजूद में आ जाये, और हुजूर सल्ल0 को मबऊस फरमाया, ताकि इन्सानी अ़राज़ और बशरी ज़रूरीयात की तक्मील हो, और यह तमाम उमूर एक मुकम्मल व अबदी दस्तूर के तहत अंजाम पाये, अल्लाह तआला ने कुर्आन मजीद में खुले तौर पर यह ऐलान कर दिया कि ''ऐ नबी! बेशक हमने आपको भेजा है बतौर गवाह और बशारत देने वाले और डराने वाले के, और अल्लाह की तरफ उस के हुक्म से बुलाने वाले और बतौर एक रौशन चिराग के। (अल अहजाबः 45–46)

इसलिए आप उस पैगाम को पूरी दुन्या में आम कर दें, उसके नतीजा में उनमें से कुछ लोग ईमान ले आयेंगे और कुछ अपने कुफ़्र पर बाक़ी रहेंगे, जब कि बुतों के परस्तार और जाहिली रस्म रिवाज के पैरोकार ज़ियादा ताक़त वर थे, और उन के मुकाबला में अहले ईमान की तादाद मात्रा और गुणवत्ता हर दो लिहाज से खासी कम थी, लेकिन हक़ का मुआ़मला यह है कि वह बहुत धीमी रफ़्तार बातिल पर गालिब आता है, अब अहले ईमान की तादाद बढ़ गई, यहां तक कि सरज़मीने मक्का ऐसे मुसलमानों से भर गई जो बाहम उल्फ़त व महब्बत रखने वाले थे, बुत परस्तों और दुश्मनों की तादाद कम होने लगी, इर्शाद बारी तआ़ला है। (और अल्लाह का यह इनआम अपने ऊपर याद रखो कि जब तुम

एक दूसरे के दुश्मन थे तो उसने तुम्हारे दिलों में महब्बत डाल दी, सो तुम उसके इनआम से आपस में भाई भाई बन गये और तुम दोज़ख़ के गढ़े के किनारे पर थे सो उसने तुम्हें उस से बचा लिया।

अगर अल्लाह तआला हमें कलम की नेमत से माला माल न करता तो तारीख़ इन्सानी *(History of Humanity)* और तारीख़े आलम *(World History)* नाम की कोई चीज़ न होती। न इन्सानी समाज में मर्कज़े इल्म व सकाफत के क़याम की कोई ज़रूरत पड़ती और न शराफत–इज़्ज़त का दौर दौरा होता। हालांकि यह तमाम चीज़ें इन्सान की नफा रसानी का काम करती हैं और इस वसी व अज़ीम दुन्या में उसको तमाम मख़लूक़ात से मुमताज़ करती हैं।

हर ज़माने में एक ऐसी जमाअत रही है, जिसे क़लम की अमानत का एहसास नहीं, बल्कि वह उसके इस्तेमाल में हद से आगे बढ़ जाती है, और सीधे रास्ते से कोसों दूर चली जाती है, इसके क़लम का इस्तेमाल तख़्रीब कारी (तोड़ फोड़) के सिवा कुछ भी नहीं, उसके पेश नज़र कुर्आन करीम की वह आयत नहीं है, जिनमें अल्लाह ने क़लम और उसके ज़रीआ से जो कुछ फरिश्ते लिखते हैं उसकी क़सम खाई है, चुनांचे फरमान ख़ुदावंदी है ''नून, क़सम है क़लम की और उसकी जो वह फरिश्ते लिखते हैं कि आप अपने परवरदिगार के फज़्ल से पागल नहीं हैं, और बेशक आपके लिए ऐसा अज्र है जो ख़त्म होने वाला नहीं, और बेशक आप अख़्लाक़ के आला मर्तबा पर हैं। क्या इन रब्बानी इर्शादात से वाज़ेह नहीं होता कि अल्लाह ने क़लम जैसी चीज़ के अन्दर तालीम तर्बियत की बुन्यादी सलाहियत रखी है?

यही वह गिराँ कद्र क़लम है जिसका रुख़ इस दौर में हक़ से बातिल की तरफ़ मोड़ दिया गया है, तामीरी कामों से तख़्रीबकारी और सलाह से फसाद की तरफ फेर दिया गया है, अब यह अल्लाह के दीन से जंग करने और ज़मीन में फसाद को आम करने का एक अहम ज़रीआ बन चुका है, नई पुरानी तारीख़ इस बात की गवाह है कि इन्सानों ने अपनी घटिया ख़्वाहिशात को पूरा करने में इस नेमत का नाजाइज़ फ़ायदा उठाया, और अब तक उठा रहे हैं।

क़लम इंसान के लिए एक अज़ीम अमानत है तमाम हालात में उस को तामीरी कामों में सर्फ करना, फसाद व बिगाड़ और बे राह रवी से बचाना इन्सान का अव्वलीन फरीज़ा है, लेकिन आज हम देख रहे हैं कि क़लम का इस्तेमाल ख़ालिक़ कायनात को राज़ी करने वाले कामों में नहीं हो रहा है, हालांकि ना फरमानी और गुनाह के कामों को फैलाने के लिए उसका नाजाइज़ इस्तेमाल करना मना है फिर यह कि जिन्हें अल्लाह ने इल्म व दीन की दौलत से नवाज़ा, उन्हें चाहिए कि वह उस अज़ीम नेमत की हक़ीक़त और उसके इस्तेमाल के उन मौक़ों को न भूलें, जो किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल में मज़कूर हैं, अल्लाह तआला ने क़लम का लफ़्ज़ सूरा इक़्रा और सूरा क़लम में वाहिद ज़िक्र किया, जब कि सूरा लुक़मान और सूरा आले इमरान में उस की जमा (अक़लाम) मज़कूर है।

अहादीस में भी क़लम का तज़्किरा मौजूद है, हज़रत

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 से मरवी है, वह फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया सबसे पहली चीज़ जो अल्लाह ने पैदा की वह क़लम है, फिर उसे हुक्म दिया कि वह हर चीज़ लिखे, एक दूसरी रिवायत हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया क़यामत के दिन साहिबे क़लम को आग के एक ताबूत में लाया जायेगा जिस पर आग ही के ताले पड़े होंगे, अगर उसने क़लमअल्लाह की इताअत और उसकी रज़ा के कामों में इस्तेमाल किया होगा तो उस ताबूत को खोल दिया जायेगा, और अगर उसने उस को अल्लाह की नाफरमानी में इस्तेमाल किया होगा तो वह सत्तर साल उस ताबूत में बंद हो कर जहन्नम में गिरेगा, यहां तक कि उस क़लम को बनाने वाले और उसकी दवात तैयार करने वाले के साथ भी यही मुआ़मला किया जायेगा।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फरमाते हुए सुना अल्लाह तआला ने सबसे पहले क़लम को पैदा किया फिर दवात को पैदा किया, फिर उसे हुक्म दिया कि जो कुछ क़यामत तक होने वाला है वह लिखो और बारी तआ़ला के कौल ''नून, वलकलमि वमा यसतुरून'' इसी सिलसिले में है, फिर अल्लाह ने क़लम पर मुहर लगा दी और ख़ामोश हो गया, इसकी यह ख़ामोशी क़यामत तक रहने वाली है। हज़रत आईशा रज़ि0 हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करती हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तीन शख़्शों से क़लम उठा लिया गया है, बच्चों से यहाँ तक कि वह बालिग़ हो जाये, सोये हुए से यहां तक कि वह बेदार हो जाये, दीवाने से यहां तक कि उसे अक़्ल आ जाए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया जब अल्लाह ने क़लम को पैदा किया तो उससे कहा लिखो! तो उसने क़यामत तक पेश आने वाली तमाम चीज़ें लिख दीं।

❖❖❖

बच्चों पर विशेष ध्यान दीजिए

बच्चे अपनी क़ौम का भविष्य और बहुमूल्य पूँजी होते हैं, यह उस सूरत में जब आप पहले दिन से उनकी शिक्षा और दीक्षा पर विशेष रूप से मेहनत करें, उचित समय से उनकी पढ़ाई शुरु की जाये, रोज़ का काम टाइम टेवुल के अनकूल हो, उनका सोना जागना लिखना, पढ़ना समय के साथ हो, इसके साथ उनको सभ्य बनाने और बड़ों का सम्मान करने की आदत डाली जाये, इसका आसान तरीक़ा यह है कि आप स्वयं उनके लिए आदर्श बनिये, अगर आप चाहते हैं कि आपका बच्चा बड़ा हो कर नमाज़ी बने तो आपके लिए ज़रूरी है कि आप हर नमाज़ जमाअत के साथ अदा करें, ग़लत सोसाइटी और ग़लत माहौल से उसको दूर रखिये, शुरु में किसी अच्छे क़ारी या हाफ़िज़ से कुर्आन मजीद और दीनियात की तालीम ज़रूर दिलवाइये इसमें ज़रा भी लापरवाही न हो, इसका फ़ाइदा आप ज़िन्दगी के हर मोड़ पर महसूस करेंगे।

◆◇◆

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः एक शख्स ने अपने मरज़े वफ़ात में अपनी जायदाद का कुछ हिस्सा अपने वरसा में से बाज को हिबा कर दिया, फिर इसी मरज़ में चन्द दिनों के बाद उनका इन्तिक़ाल हो गया, अब सवाल यह है कि मरज़े वफात में चन्द या किसी वारिस को अपनी जायदाद या माल का कुछ हिस्सा दे देना दुरुस्त है? जिन को दिया गया क्या वह शर्अन मालिक हो जायेंगे?

उत्तरः मरजुल वफात का हिबा वसीयत के दर्जा में है और वारिस के हक़ में वसीयत लागू नहीं होगी, हां अगर बक़िया वरसा राज़ी हों तो यह वसीयत लागू होगी। (मरजुल मौत का किया हुआ हिबा और सद्क़ा वसीयत के हुक्म में होता है, यही वजह है कि यह हिबा अगर वारिस के हक़ में हो तो सिर्फ एक तिहाई माले मतरुका में जारी होगा और वसीयत वारिस के हक़ में दुरुस्त नहीं है, अगर दीगर वरसा राज़ी हों तो वसीयत नाफिज़ हो सकती है)।

(मजमउल अनहारः 4/418)

प्रश्नः एक शख्स की कोई औलाद नहीं थी, उसने अपने हक़ीक़ी भाई के एक बेटे को अपना मुँह बोला बेटा बना लिया था, उन्होंने अपनी ज़िन्दगी के आखिरी मर्हला में अपनी तमाम जायदादें मुतबन्ना भतीजा को हिबा कर के क़ाबिज़ व मालिक बना दिया जबकि उनके दूसेर भतीजे जो वारिस होते, मौजूद हैं, सवाल यह है कि शख़्स मज़कूर का हिबा क्या दुरुस्त है? क्या यह नाफिज़ होगा? अगर होगा तो दूसरे भतीजों को महरूम करने की वजह से क्या वह गुनहगार होंगे?

उत्तरः शख़्स मज़कूर ने अपनी ज़िन्दगी और हालते सेहत में अपनी जायदाद अपने एक भतीजा जो ले पालक थे, को हिबा कर दी और अपना क़ब्जा ख़त्म करके भतीजा के क़ब्जा में दे दी तो भतीजा उस का मालिक हो गया, उनके इन्तिक़ाल के बाद उनके दीगर भतीजों को उसमें बतौर विरासत हक़ नहीं रहा, अगर उनकी नीयत दीगर भतीजों को नुक़्सान पहुँचाना नहीं थी बल्कि ले पालक का तआ़वुन मक़सूद था तो वह गुनहगार नहीं होंगे और हिबा भी दुरुस्त होगा और जिन को हिबा किया है वह उसके शर्अन मालिक भी होंगे।

प्रश्नः एक औरत बेवा और ला वल्द है, उसके पास कुछ जायदाद है, उसके रिश्तेदारों में एक परेशान और ज़रूरतमंद है, यह औरत चाहती है कि जायदाद का कुछ हिस्सा ज़रूरतमंद रिश्तेदार को दे दे, लेकिन दूसरे रिश्तेदार कहते हैं कि आप के बाद हम लोग इन जायदादों के वारिस होंगे इसलिए इसमें किसी को ख़ास कर के देना गुनाह है, ऐसी सूरत में यह औरत क्या करेगी, क्या अपने इरादा के मुताबिक कार ख़ैर के तौर पर ज़रूरतमंद रिश्तेदार को कुछ दे सकती है?

उत्तरः मज़कूरा औरत को शर्अन इख़्तियार है कि अपनी हयात में बहालत सेहत अपनी मिलकियत में से किसी ज़रूरतमंद को फी सबीलिल्लाह कुछ दे दे, और उस पर क़ब्ज़ा

करा दे, रिश्तेदारों को रोकने या ऐतराज़ का हक़ नहीं है, जब उनका इरादा रिश्तेदारों को महरूम करने का नहीं है बल्कि सवाब हासिल करने के लिए किसी ज़रूरत मंद रिश्तेदार की हाजत पूरी करना और अगर दूसरा रिश्तेदार जरूरतमंद नहीं बल्कि मालदार है तो भी उसमें कोई गुनाह नहीं।

(फतावा हिन्दियाः 3/484)

प्रश्नः एक शख्स के तीन लड़के हैं, दो अल्लाह के फ़ज्ल से खुश हाल हैं, एक माली एतिबार से कमज़ोर है और यही कमज़ोर लड़का अपने वालिदैन की ख़िदमत करता है, वालिद की ख़्वाहिश है कि अपनी जायदाद और मकान अपने ज़रूरतमंद लड़के को अपनी हयात में दे दे ताकि उस की ज़रूरत भी पूरी हो और उसको ख़िदमत का बदला भी दुन्या ही में मिल जाये, क्या ऐसा करना शर्अन दुरुस्त है? क्या अल्लाह के यहाँ कोई पकड़ तो नहीं होगी?

उत्तरः वालिदैन की ख़िदमत करना बड़ी सआ़दत है, इनशाअल्लाह दुन्या व आख़िरत दोनों जगहों में उसका अच्छा बदला मिलेगा, वालिद के लिए बेहतर यही है कि अपनी जायदादें तमाम औलादों में बराबर बराबर तक़्सीम कर दे, हां अगर कोई लड़का हाजतमंद है और बक़या खुशहाल हैं तो ज़रूरतमंद लड़के को जायदाद का कुछ हिस्सा या मकान दे देने में कोई हर्ज नहीं है जब्कि उनका इरादा महज़ हाजतमंद लड़के की मदद करना है, दीगर लड़कों को नुक़सान पहुंचाना नहीं है, इस सूरत में कोई गुनाह भी नहीं होगा।

(फतहुल बारीः 5/59)

❖❖❖

सहाबा किराम रज़ि0.....

की वफ़ात हुई तो उसके दो तीन दिन बाद राव फ़ज़लुर्रहमान खाँ ने अख़बार पढ़ते हुए यह ख़बर सुनाई कि हज़रत मौलाना अब्दुश्शकूर लखनवी का इन्तिक़ाल हो गया, इस ख़बर के सुनते ही फ़रमाया, ओहो! ''इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजिऊन'' हज़रत पर इस क़दर असर हुआ कि उठ कर बैठ गये, गाव तकया के सहारे थोड़ी देर ख़ामोशी के बाद फ़रमाया, उनके इस इस्तिक़बाल के लिए, अबू बकर उमर, उसमान, अली रज़ि0 न आवेंगे तो क्या दूसरे के लिए (इस्तिक़बाल) में आयेंगे? सवानेह रायेपुरी– पे0 317।

हिन्दुस्तान के उलमाये अहले सुन्नत ने हज़रत मौलाना अब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी की ताईद की और तअल्लुक़ रखा और उनके मिशन को सराहा, इनमें ख़ास तौर पर उलमाये देवबन्द, नदवा, सहारनपुर, हज़रत मौलाना ख़लील अहमद सहारनपुरी हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी, हज़रत मौलाना मु0 इल्यास कांधलवी, हज़रत मौलाना सय्यद हुसैन अहमद मदनी, हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करया कांधलवी, हज़रत मौलाना सय्यद सुलैमान नदवी, हज़रत मौलाना सय्यद अब्दुल हयी हसनी, साबिक़ नाज़िम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सय्यद अब्दुल अली हसनी साबिक नाज़िम नदवतुल उलमा के नाम क़ाबिले ज़िक्र हैं इन हज़रात के उनके बारे में एतिहासिक ताईदी कलिमात हैं, इनके अलावा हिन्दुस्तान के महान और प्रमुख उलमा–ए–हक़ ने उनके स्थापित किये हुए ''शुहदाये इस्लाम'' के जलसों में शिरकत करके और अपने ख़िताबात (व्याख्यान) द्वारा उनके काम को सराहा और उनकी शख़सियत को तसलीम किया है।

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

–मौलाना बुरहानुद्दीन सम्भली रह0 –अनुवादकः मौलाना मु0 जुबैर अहमद नदवी

ख़ुशी का इज़हारः–

शादी के अवसर पर इंसानी फ़ितरत का यह भी तकाज़ा होता है कि कुछ ख़ुशी का इज़हार और उल्लास की व्यवस्था की जाए, अतः शरीयत में इस का भी ख़याल रखा गया है हदीस में आता है कि नबी–ए–अकरम (स०) ने एक लड़की के बारे में जिसकी शादी हज़रत आइशा रज़ि० ने ही की थी और उसे रुख़सत भी कर दिया था पूछा ''क्या तुम ने दुल्हन को रुख़्सत कर दिया?'' लोगों ने कहा जी हाँ! आप ने पूछा क्या तुम ने किसी गायकार को भी साथ भेजा? क्यों कि अंसार शौकीन लोग हैं अगर तुम उसके साथ मुबारकबादी का तराना (अतैनाकुम–अतैनाकुम) पढ़ने वाले को भेज देते तो अच्छा होता।

(मिश्कात जिल्द 2 पृष्ठ 272)

इससे मालूम हुआ कि शादी के अवसर पर अच्छी आवाज़ में गुनगुनाहट के साथ कोई लाभदायक, शिक्षापरक या दुआ देने वाला कलाम पढ़ लिया जाए तो कोई हरज नहीं, क्यों कि इससे एक ही समय दो मक़सद हाहिल होते हैं, एक इच्छापूर्ति दूसरे शिक्षपरक और लाभदायक बातों का प्रभावी बयान, क्योंकि शायरी ज़्यादा प्रभावी होती है और हदीस में भी है कि कुछ शायरी और बयान हिकमत वाले और प्रभावी होते हैं।

(बुख़ारी जिल्द 2 पृष्ठः 773 जिल्द 2 पृष्ठः 908)

वलीमाः–

वलीमे को भी एक पसंदीदा बल्कि एक हद तक मतलूब (अपेक्षित) व सुन्नत (कुछ उलमा के नजदीक वाजिब) क़रार दिया गया, इस में एक मस्लेहत तो वही है की इससे खुशी का इज़हार होता है इस के अलावा दूसरे फ़ायदे भी हैं, सुन्नत वलीमा का मतलब यह नहीं है कि शोहरत और नाक ऊँची करने के लिए बहुत बड़े पैमाने पर दावत हो और खानों में फुजूलख़र्ची की हद तक तरह तरह के आइटम बनाये जाएं, बल्कि अपनी हैसियत के मुताबिक, जिसमें क़र्ज़ की ज़रुरत न पड़े और दूसरे ज़रूरी खर्चों में दुश्वारी ना पेश आये, सच्चे दोस्तों को बुला कर कुछ खिला दिया जाए यही ''वलीमा'' है।

इस बारे में भी रसूलुल्लाह (सल्ल०) का नमूना हमारे लिए मौजूद है, आप सल्ल0 ने सबसे ''भारी'' दावत–ए–वलीमा उम्मुल मूमिनीन हज़रत ज़ैनब (रजि०) से निकाह पर की थी, जिस में एक बकरी ज़ब्ह करके आमंत्रित लोगों को खिलाई, जैसा कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ख़ास ख़ादिम हज़रत अनस फ़रमाते हैंः–

''जितना भारी वलीमा हज़रत ज़ैनब (रज़ि०) के निकाह पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने किया उतना किसी बीवी के निकाह पर नहीं किया पूरी एक बकरी वलीमे में लगा दी।''

(बुख़ारी जिल्द 2 पृष्ठ 778)

एक जरूरी हिदायत :–

वलीमे के बारे में एक ध्यान देने योग्य अहम बात (जिस की ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है) यह है कि ग़रीबों को ज़रूर बुलाया जाए ऐसी हर दावत को बहुत बुरा क़रार दिया गया जिसमें बस ख़ुशहाल लोग बुलाए जाएं।

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि०) से रिवायत है कि वह अक्सर फ़रमाया करते थेः— सबसे बुरा खाना उस दावत का है जिसमें मालदार तो बुलाए जाएं और ग़रीब छोड़ दिए जाएं और यह भी फ़रमाया करते जो (बिला वजह) किसी की दावत ठुकराये वह ख़ुदा और उसके रसूल का नाफ़रमान है।

(बुख़ारी जिल्द 2 पृष्ठः 777)

वलीमे का एक खास फायदाः—

वलीमा करना खुशी के इज़हार के अलावा इसलिए भी अपेक्षित और सुन्नत करार दिया गया है कि इससे निकाह का ऐलान और प्रचार भी ख़ूब हो जाता है, इसका एक फ़ायदा यह होगा कि आम तौर पर लोगों को इस रिश्ते का पता चल जाएगा फिर उस औरत पर किसी और की नज़र नहीं रहेगी और कोई समझदार सम्बन्ध बनाने का विचार न कर सकेगा।

इंसानी स्वाभिमान की मांगः—

इंसान की असल फ़ितरत (प्रकृति) बल्कि हकीमुल इस्लाम शाह वलियुल्लाह (रह०) के बक़ौल स्वाभिमानी और खुद्दार दूसरे जानवरों की फितरत भी यही है कि वे अपनी जोड़ में साझेदारी बर्दाश्त नहीं करते इसका सबसे बड़ा सबूत यह है कि इस मसले पर अपनी जोड़ से दूसरे के सम्बन्ध का संदेह भी हो जाने पर खूनखराबे तक की नौबत हर ज़माने में आती रही है। यहाँ तक कि आज के अश्लीलता और बेहयाई के दौर में भी कुछ लोगों का संवेदनहीन हो जाना और ''साझेदारी'' में शर्म ना समझना आम इंसानी फ़ितरत के ख़िलाफ़ बग़ावत समझा जाएगा। चाहे देखने में वे कितने ही ''सभ्य'' और विकसित राष्ट्र के लोग ही क्यों ना हों (विस्तृत जानकारी के लिए देखिये ''हुज्जतुल्लाहिल बालिगह जिल्द 1 पृष्ठः 58)

जिस तरह कुछ लोग कठोर तपस्याएं करके शादी की इच्छा बल्कि खाने पीने, पहनने ओढ़ने, और सर्दी गर्मी से बचाव की प्राकृतिक आवश्यकताओं को भी छोड़ देते हैं मगर उनका यह अमल दूसरों के लिए ''दलील'' और ''इंसानी फ़ितरत'' का सुबूत नहीं समझा जाता।

अगर कुछ इंसानों के किसी खास अमल को इंसानी प्रकृति की असली आवश्यकता की दलील के तौर पर पेश किया जाना सही होता तो फिर योगियों और साधुओं जिन की संख्या हर ज़माने में अच्छी ख़ासी रही है और इस क़िस्म के ''सभ्य'' लोगों से तो हमेशा ज़्यादा रही है, की ज़िन्दगियों को भी ''दलील'' बनाना चाहिए था लेकिन हर समझदार जानता है कि ऐसा करना दुन्या को वीराने में तब्दील करने जैसा होगा। ठीक इसी तरह कुछ ''सभ्य'' और ''प्रगतिशील'' लोगों का यह तरीका इंसानों को बद्तमीज जानवरों में दब्दील करने जैसा है और इंसान का हैवान बन जाना दुन्या के वीराने में तबदील हो जाने से भी ज़्यादा खतरनाक है, शरीयत इंसानों को मुकम्मल इंसान ही बनाना चाहती है और उनके असली रुझान की रियायत और हिफाजत उसका मकसद है इसलिए इस्लाम प्राकृतिक धर्म में वह तमाम शैलियाँ मना हो गयीं, जिनका संदेह हो सकता है और जिनसे इस प्राकृतिक आवश्यकता के छति पहुँचने की संभावना होती, अतः इस्लाम के आने से पहले जितनी ऐसी शक्लें ''निकाह'' की प्रचलित थीं जिन में खुली हुई साझेदारी थी या उसकी गुंजाईश थी उन सब को पूरे तौर पर मना कर दिया गया।

❖❖❖

सय्यिदुना हज़रत हुसैन रज़ि० से अक़ीदत

—इदारा

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु सहाबीये रसूल हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल0 के नवासे हैं, जन्न्त में जवानों के सरदार होंगे, उनसे अ़क़ीदत रखना, उनसे महब्बत रखना ईमान का तक़ाज़ा है हमको चाहिए कि हम उनको बराबर ईसाले सवाब करते रहें अल्लाह ने माल दिया हो तो कुछ माल ग़रीब मुसलमानों को नक़्द दे कर या गरीब मुसलमानों को खाना खिला कर या कपड़ा दे कर उसका सवाब हज़रत हुसैन रज़ि0 को बख्शें, जितना मुम्किन हो कुर्आन मजीद पढ़ कर हज़रत हुसैन रज़ि0 को ईसाले सवाब करें, यह ईसाले सवाब सिर्फ दस मुहर्रम ही को न करें, बल्कि और महीनों और दिनों में भी करें, बेहतर यह है कि अगर हो सके रोज़ाना ईसाले सवाब करें, सम्पादक मफ्लूज होने से पहले रोज़ाना कुछ कुर्आन पढ़ कर यूं दुआ करता था, ऐ अल्लाह! जो कुछ मैंने पढ़ा है उसका सवाब सारे मुसलमानों को, तमाम सहाबये किराम को बख़्श दे खास कर हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हजरत हसन, हज़रत हुसैन, हज़रत हमज़ा, हज़रत अब्बास, हज़रत सफिया रज़ियल्लाहु अन्हुम और तमाम अहले बैत को इसका सवाब बख़्श दे, अब रोज़ाना इस ईसाले सवाब से महरूमी है, पाठकों से अनुरोध है कि वह रोज़ाना तमाम मुसलमानों को ईसाले सवाब किया करें, उसमें कुछ सहाबये किराम के नाम भी लिया करें।

हज़रत हुसैन रज़ि0 की याद में नौहा, मातम करना, ढोल, ताशा बजाना, तअ़ज़िया रखना जाइज़ नहीं है, इसी तरह मुहर्रम में बहुत सी बिदआत की जाती हैं, उलमा ने उन सब को नाजाइज़ कहा है, उनसे बचना चाहिए, अल्लाह तआला हमको तमाम बिदअतों से बचाये और सारे सहाबा की महब्बत दे, खासतौर पर अहले बैत की महब्बत दे और उनके रास्ते पर चलाये, या अल्लाह अपनी महब्बत दे, अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत दे, आमीन।

❖❖❖

बयान गुफा वाले अल्लाह वालों का
(जो एक गुफा में तीन सौ साल तक जीवित सोते रहे)

—इदारा

(और ऐ पैगम्बर!) क्या तुम ऐसा ख़्याल करते हो कि गुफ़ा और खोह के रहने वाले (असहाबे कहफ़ व रकीम) हमारी (कुदरत की) निशानियों में से कुछ ताज्जुब की चीज़ थे।(9) जब वह (चन्द) जवान गुफ़ा में जा बैठे और प्रार्थना की कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम पर अपनी तरफ़ से कृपा कर और हमारे काम को संवार दे।(10) तो कई वर्ष के लिए हमने गुफ़ा में उनके कान थपक (कर चैन से सुला) दिया।(11) फिर हमने उनको उठाया ताकि देखें कि दो गरोहों में से किसको (गुफ़ा में अपने सोते) रहने की मीयाद सही याद है।(12)

(ऐ पैग़म्बर!) हम उनके हाल ठीक–ठीक तुमसे बयान करते हैं कि वह कुछ जवान थे जो अपने परवरदिगार पर ईमान लाये और हमने उनको और ज़ियादा हिदायत दी।(13)

और हमने उनके दिलों पर (सब्र और साबितक़दमी की) गिरह लगा दी, जब वे (बादशाह दकियानूस के कुफ़्र व जुल्म के खिलाफ़ उठ) खड़े हुए और बोले कि हमारा परवरदिगार आसमानों और ज़मीन का परवरदिगार है हम तो उसके सिवाय किसी दूसरे माबूद को (पूज्य मान) कर न पुकारेंगे, (अगर हम ऐसा करें) तो हम बड़ी ही अनुचित बात करें।(14) (और कहने लगे कि) यह हमारी क़ौम है जिसने अल्लाह के सिवाय बहुतेरे पूजित मान रखे हैं। तो (अगर उनका दावा सही है तो) इनकी कोई खुली सनद क्यों नहीं पेश करते। फिर जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा उससे बढ़ कर, कौन ज़ालिम है।(15) और जब तुमने (यानी हम लोगों ने अपनी जाति के) इन लोगों से और अल्लाह के सिवाय जिनकी यह लोग पूजा करते हैं उनसे किनारा खींच लिया तो (आओ, फ़लाँ) गुफ़ा में चल बैठो, तुम्हारा परवरदिगार अपनी दया (की चादर) तुम पर फैला देगा और तुम्हारे काम में सुविधा कर देगा।(16) और जब धूप निकले तो तुम देखोगे कि वह उनकी गुफ़ा से दाहिनी ओर को बचती हुई निकल जाती है और जब छुपती है तो उनसे बाईं ओर को कतरा जाती है। और वह गुफ़ा के अन्दर बड़ी चौड़ी जगह में हैं। यह (भी) अल्लाह की (कुदरत की) निशानियों में से है। (और) जिसको अल्लाह राह दे वही सही राह पर है और जिनको वह गुमराह करे तो तुम कोई उसको राह पर लाने वाला हिमायती न पाओगे।(17)

और तुम उनको (देखते तो) समझते कि जागते हैं, हालांकि वह सो रहे थे, और हम दाहिनी तरफ़ को और बाईं तरफ को उनकी करवटें बदलते रहते थे, और उनका कुत्ता चौखट पर अपने दोनों हाथ फैलाये बैठा था, अगर तुम उन लोगों को झाँक कर देखते तो उल्टे पैर भाग खड़े होते और इन (के दृश्य) से तुमको दहशत समा जाती।(18)

और इसी तरह हमने उनको जगा दिया कि अपने आपस में पूछ–ताछ करें। उनमें से एक कहने वाले ने कहा भला तुम कितनी देर (इस हालत में)

रहे होगे। वे बोले कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम (रहे होंगे)। फिर वह बोले कि तुम्हारा परवरदिगार ही अच्छी तरह जानता है जितनी मुद्दत तुम (खोह में) रहे।

तो (अब) अपने में से एक को अपना यह रूपया दे कर शहर की तरफ़ भेजो ताकि वह देखे कि कौन सा पवित्र (हलाल) भोजन (मिल सकता) है, तो उसमें से खाना तुम्हारे पास ले आये, और चुपके से लेकर चला आये और किसी को तुम्हारी (यहां होने की) खबर न होने दे।(19) (वरना) अगर वह (तुम्हारी क़ौम के) लोग तुम्हारी खबर पा जायेंगे तो तुम पर पथराव करके मार डालेंगे या तुमको उल्टा फिर अपने दीन में कर लेंगे और (ऐसा हुआ तो) तुम को कभी कामयाबी नसीब न होगी।(20) और इस तरह हमने (उनकी क़ौम को) उनकी खबर कर दी कि जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है और (क़ियामत की) घड़ी (आने) में कुछ भी शक नहीं। (चुनांचे 300 साल पहले के इन लोप हुए पीर सन्तों की खबर पाने के बाद) जब लोग उनके सम्बन्ध में आपस में उनकी यादगार क़ायम करने के अलग–अलग मन्सूबों पर झगड़ने लगे, तो उन्होंने कहा उन (कहफ़वाले बुजुर्गों की गुफ़ा) पर एक इमारत बनाओ और उनके हाल (की जियादा जाँच पड़ताल बेकार है, उस) को तो उनका परवरदिगार ही अच्छी तरह जानता है। उनके बारे में जिनकी राय ज़बरदस्त रही उन्होंने कहा हम उनके (स्थान) पर एक मस्जिद बनायेंगे।(21) अब कोई कहते हैं (कहफ वाले) तीन थे चौथा उनका कुत्ता, और कई कहते हैं कि पाँच थे और छठवां उनका कुत्ता। बिना जाने छिपी बातों में अटकल चलाते हैं और (कोई–कोई) यह भी कहते हैं कि वे सात थे और आठवां उनका कुत्ता। (तो ऐ पैग़म्बर। इन लोगों से) कहो कि इस गिनती को तो मेरा परवरदिगार ही बेहतर जानता है, इनको बहुत थोड़े ही लोग जानते हैं। तो (ऐ पैगम्बर!) उन (कहफ़ वालों) के बारे में हुज्जत में मत पड़ो सिवाय सरसरी बात करने के और न उनके सम्बन्ध में इनमें से किसी से पूछ ताछ करो (क्योंकि असल सबक़ उनकी तादाद से नहीं है बल्कि उनके आचरण से है)।(22)

और (ऐ रसूल!) किसी काम की बाबत न कहा करो कि मैं इसको कल कर दूँगा। बल्कि हमेशा यह कहो कि इंशाअल्लाह (अल्लाह चाहे तो इस काम को कल कर दूंगा)। और अगर (कभी) भूल जाया करो तो अपने परवरदिगार को (फिर) याद कर लिया करो और कह दिया करो कि शायद मेरा परवरदिगार इससे ज़ियादा सीधी राह मुझको बताये।(24) और (कहा जाता है कि कहफ़ वाले) वे अपनी गुफ़ा में 300 साल रहे और (किन्ही की राय में) 1 साल और(25) (ऐ पैग़म्बर! उनसे) कहो कि जितनी मुद्दत वह (कहफ़वाले गुफ़ा में) रहे अल्लाह ही खूब जानता है। आसमानों और ज़मीन में छिपे ग़ैब (अदृष्य) का ज्ञान उसी को है। (वह अल्लाह) क्या खूब देखने वाला और क्या खूब सुनने वाला है। उसके सिवाय लोगों का काम संभालने वाला और कोई नहीं और न वह अपने हुक्म में किसी को शरीक करता है।(26)

❖❖❖

इस गम की तलाफी कब होगी, इस दर्द का दरमां क्या होगा

—माहिरुल क़ादिरी मरहूम

जिस दिल में ख़ुदा का ख़ौफ़ रहे, बातिल से हरासां क्या होगा,
जो मैत को ख़ुद लब्बैक कहे, वह हक़ से गुरेज़ां क्या होगा।
आईने चमन-बन्दी भी नहीं दस्तूर नवा संजी भी नहीं,
अब इस से ज़ियादा गुलशन का शीराज़ा परेशां क्या होगा।
अरबाबे महब्बत से ये कहो, शिक्वे न करें कुछ काम करें,
जो ज़ुल्म व सितम पर इतराये, शिक्वों से पशेमां क्या होगा।
जो लोग हवा के साथी हैं, वह अपने ख़ुदा के बाग़ी हैं,
इस जुर्मे बग़ावत से बढ़ कर ईमान का नुक़्सां क्या होगा।
जिस कश्ती के पतवारों को ख़ुद मल्लाहों ने तोड़ा हो,
उस कश्ती के हमदर्दों को फिर शिकवये तूफां क्या होगा।
मुद्दत से कशाकश जारी है, सय्याद में और गुलचीनों में,
तंजीमे गुलिस्तां होने तक, अंजामे गुलिस्तां क्या होगा।
जिस चोट से दिल में हलचल है, आहों में तो ज़ाहिर क्या होगी,
सीने में जो महशर बर्पा है, अश्कों से नुमायां क्या होगा।
इस शामे ख़जां ने अब तक तो हर तरह से पर्दादारी की,
जब सुब्हे बहार आ जायेगी, ऐ तंगीये दामां क्या होगा।
ख़लवत हो कि जलवत हो, माहिर दिल खोया रहता है,
इस ग़म की तलाफी कब होगी, इस दर्द का दरमां क्या होगा।

क़ानूने इलाही है क़ुरआन का फ़रमान

—अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी

अल्लाह का फ़रमान तो बदला न जायेगा ।
क़ुरआन का फ़रमान भी बदला न जायेगा ।।

इन्सान की भलाई क़ुरआन बताता है ।
भलाई का ये पैगाम तो बदला न जायेगा ।।

ज़ेरो ज़बर का फ़र्क भी क़ुरआँ में न होगा ।
क़ुरआन का एक नुक़ता भी बदला न जायेगा ।।

वह ख़ुद ही बदल जायेगा नियत है जिसकी ख़ाम ।
क़ुरआन क़यामत तक बदला न जायेगा ।।

क़ुरआन की हर आयत सीनों में है महफ़ूज़ ।
क़ुरआन का एक लफ़्ज़ भी बदला न जायेगा ।।

क़ुरआँ का मुख़ालिफ़ अल्लाह का दुश्मन है ।
दुश्मन कहे कुछ भी वह माना न जायेगा ।।

क़ुरआँ के तीस पारे अल्लाह के हैं प्यारे ।
इन प्यारे सिपारों को बदला न जायेगा ।।

गर शक़ करे क़ुरआन में इबलीस का है भाई ।
तौबा बग़ैर इस्लाम में लाया न जायेगा ।।

क़ानूने इलाही है क़ुरआन का फ़रमान ।
क़ानूने इलाही तो बदला न जायेगा ।।

सिद्दीक़ी कर ले यहाँ कुछ नेक अमल ।
बद अमल को जन्नत में भेजा न जायेगा ।।

❖❖❖

महान पक्षी-विज्ञानी सालिम अली

—इदारा

''अंकल मिलार्ड! मैंने कभी स्वप्न में भी न सोचा था कि पक्षी इतने प्रकार के होते हैं!'' ये अचरज भरे शब्द थे उस नौ वर्षीय बालक सालिम अली के जिसने मुम्बई नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के पक्षी–संग्रहालय में मरे हुए सैकड़ों पक्षीयों के नमूनों को देख कर कहे थे। वह एक मृत गौरैया से संबंधित जिज्ञासा मिटाने पक्षी–संग्रहालय आया था। परन्तु यहां पक्षियों के विशाल संग्रह को देख कर वह आवाक् रह गया और उसकी जिज्ञासा और भड़क उठी। वह प्रतिदिन संग्रहालय आ कर पक्षियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने लगा।

उस बालक का नाम मुजुद्दीन अब्दुल अली था, जो आगे चल कर पक्षी–विज्ञानी सालिम अली के नाम से विख्यात हुआ। सालिम अली को पक्षियों का चलता–फिरता विश्वकोश कहा जाता है।

सालिम अली की यह दिनचर्या बन गई कि वह जहाँ कहीं भी जाता, आकाश में उड़ते पक्षियों को देखता, पेड़ों पर बैठे या आस–पास उड़ते पक्षियों को निहारता, बाग–बगीचे में इन्हें तलाश करता। नदी–नालों के किनारे घूमता–फिरता पक्षियों के पीछे भागता रहता। वह अपने भाई के साथ बर्मा (अब म्यामार) के जंगलों में कारोबार करने गया। वहां भी पक्षियों के विषय में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा प्रबल रही, बल्कि प्रबलतम होती गई। इस प्रकार वह निरन्तर अपना पक्षी–ज्ञान बढ़ाता रहा।

समय बीतता रहा, यहां तक कि वह कॉजेल पहुँच गया। वहां फ़ादर ब्लेटर उन्हें प्राणीशास्त्र पढ़ाते थे। उन्होंने सालिम अली की अभिरूचि को देखते हुए उसे मुम्बई नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के पक्षी संग्रहालय में गाइड का काम दिलवा दिया। अब सालिम अली वहाँ आने वाले लोगों को विभिन्न प्रकार के मरे हुए पक्षियों के बारे में बताने लगे। परन्तु प्रायः यह होता था कि वे बहुत से लोगों के कई प्रश्नों के उत्तर नहीं दे पाते थे। उन्होंने सोचा कि इसके बारे में सही और विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। यही सोच कर वे उच्च शिक्षा के लिए बर्लिन रवाना हो गये।

जब वे बर्लिन से पक्षी–विज्ञान में ट्रेनिंग लेकर वापस आये तो उनकी नौकरी समाप्त हो चुकी थी। वे नई नौकरी की तलाश में इधर–उधर भटकने लगे। कड़े संघर्ष के बावजूद उन्हें कोई नौकरी नहीं मिली, इसलिए उनके सामने आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया। पत्नी की सलाह पर वे अपने पैत्रिक घर में चले गये। संयोगवश, उनके घर के सामने एक पेड़ पर 'बया' नामक पक्षी ने अपना घोंसला बनाना शुरु किया, जो सालिम अली की नज़रों से छिपा न रह सका। वे सारा दिन एक नोटबुक और क़लम पकड़े बैठे रहते और चिड़िया के घोंसला बनाने के काम को ध्यान से देखते रहते और उसके बारे में लिखते जाते। उनके इस निरीक्षण से पता चला कि घोंसले के निर्माण में केवल नर का ही हिस्सा होता है। जब

घोंसला आधा बन जाता है तो मादा आकर उसे देखती है और फिर आगे का काम भी उसी की पसन्द के अनुसार नर ही अंजाम देता है। फिर मादा उसमें अण्डे देती है और जब बच्चे बड़े होते हैं, तब तक नर एक दूसरा घोंसला तैयार कर लेता है और इसी तरह ये पक्षी अपना पुराना घर छोड़ कर नये घर में आ जाते हैं। ये सारी बातें बड़ी दिलचस्प थीं। इन बातों को सालिम अली ने अपने पहले शोध–प्रबन्ध में लिखा। इस निबंध का शीर्षक था, 'बया के स्वभाव और क्रिया–कलापों का वर्णन'।

इस शोध–प्रबन्ध के छपते ही सालिम अली पक्षी–विज्ञानी के रूप में पहचाने जाने लगे। फिर वे पक्षियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के काम में ऐसे खोये कि स्वयं को भूल बैठे। वे आजीवन पक्षियों के पीछे भागते रहे। इसी सिलसिले में उन्होंने देश–विदेश की अनेकानेक यात्राएं कीं। हिमालय की बर्फ़ीली चोटियाँ हों या आग बरसाता रेगिस्तान, हर जगह सालिम अली उत्साह और लगन से काम करते रहे।

सालिम अली ने कच्छ के जंगलों की भी यात्रा की थी। यह यात्रा सबसे कठिन और खतरनाक थी। वे वहां हंसों की बस्ती की तलाश में गये थे। इस यात्रा में उन्हें दस–दस घण्टे तक ऊँट की पीठ पर सवार रहना पड़ता था। अनेक कठिनाइयों के बाद में उस जगह को तलाश करने में सफल हो गये, जहां हंसिनी अण्डे देती थी। वहाँ उन्होंने जो कुछ देखा, उसे अपने एक निबन्ध में लिखा।

सालिम अली ने अपने निबन्ध में बताया कि हंसिनी के अण्डे देने और उन्हें सेने में किन–किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उन्होंने 84 वर्ष की उम्र में लद्दाख की यात्रा की और वहाँ काली गर्दन वाली सारस की तलाश में ठंडी हवाओं और थपेड़े सहते हुए उसके बारे में बहुत सी जानकारियाँ एकत्र कीं, जो आज भी एतिहासिक तथा अत्यन्त महत्वपूर्ण दस्तावेज की हैसियत रखती हैं। फिर वह 87 वर्ष की उम्र में हिमायल की गोद में एक विशेष प्रकार की बटेर की खोज में निकल पड़े। बटेर की उस प्रजाति को खोज निकाला और उसके बारे में विस्तृत जानकारी दी। अपने जीवन के आखिरी वर्ष में भी वे अपने हाथों में दूरबीन लिए और कंधों पर कैमरा लटकाए दिन–दिन भर ख़ाक छानते रहे और रंग–बिरंगे पक्षियों के बारे में नई और अजीबो–गरीब जानकारियाँ देते रहे। सालिम अली जब तक जीवित रहे, बस काम ही करते रहे। उन्होंने कठोर परिश्रम करके निजी अनुभव तथा ज्ञान के आधार पर पक्षियों के रूप–रंग, क्रिया–कलाप, आदतें, प्रजनन–क्रिया, खान पान, आवास इत्यादि के बारे में विस्तार से लिखा। 'भारतीय पक्षी', 'कच्छ के पक्षी', 'भारत के पहाड़ी पक्षी', 'ट्रावंकोर और कोचीन के पक्षी', 'भारत और पाकिस्तान के पक्षी' इत्यादि उनकी प्रसिद्ध पुस्तकें हैं। सालिम अली को पक्षियों के जीवन पर शोधपूर्ण पुस्तकें लिखने के कारण देश–विदेश से अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए। उन्हें देश के महत्वपूर्ण 'पद्म विभूषण' से भी सम्मानित किया गया।

सालिम अली जब तक जीवित रहे, पक्षियों के जीवन और व्यवहार पर शोध–कार्य करते रहे। यह शोध–कार्य अभी

जारी ही था कि मुम्बई में नवम्बर 1892 ई0, को जन्मे इस महान पक्षी–विज्ञानी का देहान्त 20 जून 1987 ई0 को हो गया। आकाश में उड़ते हुए अनगिनत पक्षी हमें सदा इस पक्षी–विज्ञानी की याद दिलाते रहेंगे।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी.....

अतः इस हदीस से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक क़ब्र की जियारत (दर्शन) के लिए सफ़र करने से मना साबित नहीं होता, बल्कि दूसरी हदीसों के अनुसार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की जियारत के लिए सफ़र करना सवाब का काम है।

अरबी जानने वाले ध्यान दें:–

जब मुस्तस्ना मिन्हु मह़जूफ हो तो आमतौर से मुस्तस्ना की जिंस से समझा जाता है, इस हदीस में मुस्तस्ना मिन्हु महज़ूफ़ है और मुस्तस्ना मसाजिद है इसलिए मुस्तस्ना मिन्हु मस्जिद लेना चाहिए।

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

मानव एकता व समता.....

मचा देने वाले इस एलान को सही तौर पर समझ लेती और स्वीकार कर लेती।

हमारी आदत है कि कुछ चीज़ों को धीरे–धीरे और किसी माध्यम से स्वीकारते हैं जैसे बिजली के करेन्ट को ढके हुए अथवा तारों के अन्दर छिपी हुई हालत में तो छू सकते हैं, मगर जब हम उसे बिना माध्यम के छूते हैं तो कड़ा झटका लगता है और कभी वह हमारी मौत का कारण बन जाता है।

ज्ञान व दर्शन की इस लम्बी यात्रा ने, जिसे दुन्या ने इस्लामी आह्वाहन और इस्लामी समाज के सहारे तय किया है, इस क्रान्तिकारी घोषणा को आज दैनिक जीवन की एक वास्तविकता बना दी है जिसे आज दुन्या की प्रत्येक राजनीतिक व सामाजिक संस्था अपनाये हुए है और जिसकी एक देन U.N.O. का ''मानव अधिकार चार्टर'' भी है।

❖❖❖

ईमानियात

कुर्आन ने ''आमिनू वअ़मलुस्-सालिहात'' पर ज़ोर दिया है यही इस्लाम की बुन्याद है, अर्थात ईमान लाओ और नेक अमल करो, ईमान को प्राथमिकता हासिल है, देखने में कोई अमल कितना अच्छा हो लेकिन ईमान के बिना उस अमल की कोई अहमियत नहीं।

ईमानियात के सिललिसे में दो कलिमों का ज्ञान ज़रूरी है, एक ईमान मुजमल, दूसरा ईमान मुफ़स्सल, एक मोमिन बन्दा ज़बान से इसे कहता है और दिल से इसका इक़रार करता है, तब सही माना में वह मोमिन कामिल (पूर्ण रूप से मोमिन) ईमान वाला होता है, आप उसे पढ़िये समझिये।

ईमान मुजमलः–

अनुवादः– मैं ईमान लाया अल्लाह पर जैसा कि वह अपने नामों और अपनी सिफ़तों (विशेषताओं) के साथ है और मैंने उसके सारे हुकमों को क़बूल किया, ज़बान से इक़रार है और दिल से यक़ीन है।

ईमान मुफ़स्सलः–

अनुवादः– मैं ईमान लाया अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों पर और क़ियामत के दिन पर और अच्छी बुरी तक़दीर पर कि वह अल्लाह तआला की तरफ़ से है और मरने के बाद दोबारा उठाये जाने पर, पहला कलिमा तय्यिबा जिस में अल्लाह तआला की तौहीद और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत का इक़रार है, इस्लाम में प्रवेश होने का दरवाज़ा है।

कलौंजी

–प्रस्तुतिः राशिदा नूरी

कलौंजी मेदे को ताक़त देती है और रियाह निकालती है आँतों में कीड़े हों तो उनको मारती है पेट का उफारह दूर करती है हैज़ और पेशाब को जारी करती है गुर्दा और मसाना की पथरी में भी इसका इस्तेमाल मुफीद है पुराने बलग़मी और सौदावी बुख़ारों में भी इसका इस्तेमाल फायदे मंद है, गठिया नक़रस और अ़र्कुन्निसा को दूर करती है इन तमाम फायदों के लिए पाँच तोला कलौन्जी को रात के वक़्त सिरके में भिगो रखें और फिर अगले रोज़ साये में ख़ुशक कर के बारीक पीस छान कर सफूफ बनाएं और शहद खास पन्द्रह तोला कवाम में मिला कर रखें और छः माशे से एक तोले तक खाएं।

कलौंजी, हालून, अजवाइन और मेथी ये चारों चीज़ें बराबर वज़न सालिम ही मिला कर रख छोड़ें और रोज़ाना सुबह को तीन चार माशे फाँक कर दो चार घूँट ज़रा गर्म पानी पियें इस नुस्ख़े को हाकिमे बदन, कहते हैं। गठिया दर्द कमर और दूसरे बादी, बलगमी, दर्दों और हिचकी के लिए भी मुफीद दवा है कलौंजी तीन माशे को बारीक पीस कर मक्खन एक तोला में मिला कर चटाएं। पीलिया के बाद आँखों की ज़र्दी को दूर करने के लिए भी कलौंजी एक निहायत मुफीद दवा है कलौंजी के सात दाने औरत के दूध में पीस कर नाक में सुड़कने से आँखों की ज़र्दी दूर हो जाती है।

कलौंजी पाँच तोले को ज़रा कूट कर आध सेर तिलों का तेल मिलाकर बहुत हल्की आँच पर पकाएं, फिर उसको साफ करके रखें ये तेल मालिश करने से गठिया, कमर के दर्द और फालिज व लक़वा में फायदा देता है कलौंजी को सिरके में पीस कर लेप करने से फल भरी, दाद, बाल खोरा और मुहासे दूर हो जाते हैं, कलौंजी को भून कर कपड़े में बाँध कर सूंघने से ज़ुकाम अच्छा हो जाता है, अगर पुराना दर्द सर हो या आधा सीसी का दर्द सताता हो तो उसे सिरका में पीस कर सुड़कने से ये शिकायतें दूर हो जाती हैं।

❖❖❖

शहादत की वास्तविकता

—डॉ0 हफ़िज़ हारून रशीद

शहादत से इनसान मरता नहीं है ।
है ज़िन्दा वह रहता, पर दिखता नहीं है ॥
अता उसको होती, हयाते अबद है ।
हर इक को यह दरजा मिलता नहीं है ॥
शहीदों के रुत्बे जो हैं जान लो ।
शहीदों को हरगिज़ न मुर्दा कहो ॥
वह ज़िन्दा हैं, पाते हैं रोज़ी खुदा से ।
है क़ुरआन में यह लिखा, जान लो ॥
शहादत इबादत है आला, खुदाया,।
अता कर मुझे भी शहादत खुदाया ॥
नबी ने शहादत की, की थी तमन्ना।
सलाम और रहमत हो उन पर खुदाया ॥
जो राहे खुदा में हुए हैं, शहीद ।
हुआ उनसे राज़ी खुदाये मजीद ॥
है, जन्नत में उनके लिए यह सदा ।
मरहबा, मरहबा, मरहबा, या शहीद ॥
शहीदों के सरदार ''हमजा'' शहीद ।
''उमर'' हैं, शहीदों में आला शहीद ॥
हैं ''उस्मा'' शहीदों में आला शहीद ।
''हुसैन'' और ''हसन'' दोनो भाई शहीद ॥
शहीदों का दरजा बहुत है बड़ा ।
खुदा के करम से उन्हें है मिला ॥
दुआ है यह आसी की, मेरे खुदा ।
मुझे भी शहीदों में अपने मिला ॥

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ ٹیگور مارگ
لکھنؤ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25.04.2020 ________ تاریخ

अहले खैर हज़रात से!

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम की सरपरस्ती में दारुल उलूम नदवतुल उलमा अपनी इल्मी व दीनी तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों एवं नियमों को सीने से लगाये हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था, यानी नये ज़माने में इस्लाम की मुअस्सिर और सही तर्जुमानी, दीन व दुन्या की व्यापकता और इल्म व रुहानियत के एकता की कोशिश, फितन–ए–लादीनियत और ज़ेहनी इरतिदाद का मुकाबला, इस्लाम पर एतिमाद और उलूमेइस्लामिया की बरतरी व इम्तियाज़ का ऐलान व इज़हार, दीने हक से वफादारी और शरीअत पर इस्तिक़ामत।

आपसे हमारी अपील है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत को समझते हुए पूरी फराख़दिली, फ़य्याज़ी और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर तआउन व मदद फरमायें कि हिन्दुस्तान में दीन के किलों की हिफ़ाज़त का इससे बेहतर रास्ता और इससे ज़ियादा पायदार कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

जैसा कि आप को मालूम है कि रमज़ानुल मुबारक के मौक़े पर दारुल उलूम नदवतुल उलमा के असातिज़ा, सुफ़रा व मुहस्सिलीन आप हज़ारात की ख़ितमत में हाज़िर हो कर सद्क़ात व जक़ात व चन्दे की वसूलयाबी का काम अंजाम देत हैं लेकिन इस वक़्त पूरे मुल्क में क्रोना वायरस की वजह से लॉकडाउन है, ऐसे हालात में सफ़र करना ना मुम्किन है इसलिए आप के चन्दे की वसूलयाबी बैंक द्वारा ही मुम्किन है।

इसलिए आप हज़रात से अपील है कि अपने सद्क़ात व अतियात चेक/ड्राफ्ट और ऑन लाइन, नदवतुल उलमा के खातों में भेजें ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में नदवतुल उलमा के साथ आप का तआउन निहायत अहमियत रखता है, अल्लाह तआला हम सब की कोशिशों को कबूल फ़रमाये और उनको हमारे लिए ज़ख़ीर–ए–आख़िरत बनाये। आमीन

मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी
नाजिरे आम नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

(प्रोफेसर) मु0 असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
A/C No. 10863759711 (अतियात)
A/C No. 10863759766 (ज़कात)
A/C No. 10863759733 (तअ़मीर)
SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

उर्दू सीखये —इदारा

नीचे लिखे उर्दू के अशआ़र पढ़िये,
मुश्किल आने पर बाद में लिखे हिन्दी अशआर से मदद लीजिए

اہلِ سنّت پانچ ہیں
دین میں مسلک پانچ ہیں
حنفی اور مالکی سب برحق ہیں
شافعی اور حنبلی سب برحق ہیں
اہلِ حدیث یا اہلِ اثر برحق ہیں
بےشک یہ پانچوں سب برحق ہیں
آپس میں یہ لڑیں نہیں
برا کسی کو کہیں نہیں
نبی پہ رحمت رہے مدام
یا رب لاکھوں ان پہ سلام
رحمت ان کی آل پر
اور ان کے اصحاب پر

अहले सुन्नत पाँच हैं
दीन में मस्लक पाँच हैं
हनफी और मालिकी सब बरहक़ हैं
शाफई व हम्बली सब बरहक़ हैं
अहले हदीस या अहले असर बरहक़ हैं
बेशक यह पाँचों सब बरहक़ हैं
आपस में यह लड़ें नहीं
बुरा किसी को कहें नहीं
नबी पे रहमत रहे मुदाम
या रब लाखों उन पे सलाम
रहमत उनकी आल पर
और उनके अस्हाब पर